

जून 2015

कीमत ₹ 10

दादावाणी



मन से
द्वेष या घृणा
हो जाए

वाणी से
किसी का उल्टा
बोले

किसी के
साथ झगड़ा
हो जाए

किसी को अपने मन-वचन-काया से किंचित्मात्र भी दुःख हो तो जानना कि अपनी ही भूल है। हमारी कुछ भी भूल हो गई हो तो तुरंत ही नकद प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए।



संपादक : डिम्पल मेहता

वर्ष : १० अंक : ८

अखंड क्रमांक : ११६

जून २०१५

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabagwan.org

www.dadabagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by

Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at

Amba Offset

Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये

यू.एस.ए. : १५० डॉलर

यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

दुःख दे दिया ? वहाँ आवश्यकता है प्रतिक्रमण की

संपादकीय

अति दुर्लभ इस मनुष्य जीवन का ध्येय क्या होना चाहिए? सांसारिक ध्येय चाहे जो भी हो, लेकिन आत्यंतिक तो सर्व दोषों से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करने का ही होना चाहिए। उसकी शुरुआत कैसे करनी है? ‘हमसे जीवमात्र को दुःख नहीं हो,’ वहाँ से करने के लिए कहा है।

रोजमर्रा के व्यवहार में जो आपसे संबंधित व्यक्तियों को, घरवालों को, बुजुर्गों को, रिश्तदारों को, मित्रों को, आश्रितों को, सहाध्यायियों को जाने-अनजाने मन-वचन-काया से दुःख दे देते हैं। ऐसे मौकों पर क्रोध-मान-माया-लोभ, राग-द्वेष से अतिक्रमण हो जाते हैं और दोनों तरफ से कषाय और दुःख की परंपरा शुरू हो जाती है।

कर्मों के उदय के कारण डिस्चार्ज कर्म तो फूटेंगे और तब ऐसा भी हो सकता है कि शायद हमसे औरों को दुःख हो जाए। लेकिन उसमें से बाहर कैसे निकलें? परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) हमें इस रहस्य का स्पष्टीकरण देते हुए कहते हैं, ‘मनुष्य से दोष हो जाना स्वाभाविक है, लेकिन इससे विमुख होने का एकमात्र रास्ता है प्रतिक्रमण।’ प्रतिक्रमण यानी समझदारी पूर्वक अपनी भूलों व दोषों से पीछे हटना। जैसे यदि कपड़े पर चाय का दाग लग जाए तो तुरंत धो लेते हैं, वैसे ही अंतःकरण में उत्पन्न होनेवाले दोषों का भी शूट ऑन साइट (दोष होते ही) प्रतिक्रमण करना जरूरी है और तभी आत्मा का सच्चे आनंद का अनुभव कर पाएँगे।

यहाँ पर दादाश्री प्रतिक्रमण के साथ-साथ जीवन की वास्तविकता भी समझाते हैं ताकि आपकी बुद्धि को समाधान हो जाए। और साथ ही उत्पन्न होनेवाले दुःखों के विरुद्ध अंदर दृढ़तापूर्वक प्रतिक्रमण करना है, ऐसा नक्की करवाते हैं। जब इन दुःखदाई व्यवहार से सामनेवाले को दुःख हो जाता है तब इसके जोखिम, परिणाम, जीवन की वास्तविकता वगैरह की गुह्य समझ से बुद्धि को सटीक समाधान मिल जाता है, इसके फल स्वरूप उसकी अंतर गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं और अंत में दृढ़तापूर्वक नक्की हो जाता है कि ‘अब मुझे किसी को भी दुःख देना ही नहीं है।’

दादाश्री हमेशा कहते थे कि हमारे हृदय में निरंतर ऐसा भाव रहता है कि, “जो सुख मैंने प्राप्त किया वैसे पूरे जगत् को प्राप्त हो। मुझे और कुछ नहीं चाहिए, दुनिया की कोई चीज नहीं चाहिए। हिंदुस्तान और विश्व के लोगों पर किसी प्रकार से अक्रम विज्ञान का असर हो, सभी का कल्याण हो, इसकी पैरवी में हूँ। इसी के लिए मैं ये सब अपना काम कर रहा हूँ। इस जगत् कल्याण के तंबू को जो सहारा दे सकें, वे देना।”

मुझे आपसे एक ही बात कहनी है कि आपमें जिस भी चीज की काबिलियत होगी, वह चीज आपको घर बैठे मिल जाएगी। आपमें शुद्धता होनी चाहिए। आपकी शुद्धता में क्या होना चाहिए? इस जगत् में किसी भी जीव को आपसे दुःख नहीं हो। यदि आपको कोई दुःख दे जाता है तो वह नियमानुसार है, हिसाब से हैं।

‘मैं आत्मा होकर, बोल रहा हूँ और पुरुषार्थ करने निकला हूँ। अतिक्रमण हो जाना वह स्वाभाविक है, लेकिन प्रतिक्रमण करना, वह हमारा पुरुषार्थ है।’ अब ज्ञानी की आज्ञानुसार हमें प्रतिक्रमण करके, उसकी जिम्मेदारी से मुक्त होकर मोक्ष में चले जाना है। इस निश्चय को हम ज्ञानीपुरुष द्वारा बताए गए मार्ग पर पुरुषार्थ करके सार्थक कर लें।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

दुःख दे दिया ? वहाँ आवश्यकता है प्रतिक्रमण की

व्यवस्थित को कर्ता समझो, तो नहीं जोखिमदारी

प्रश्नकर्ता : हम जानते हैं कि किसी का दिल न दुःखे उस तरह से जीना चाहिए लेकिन जब हम किसी को मानसिक दुःख पहुँचाएँ, तब अन्याय कहलाता है। व्यापार में तो, माल वही का वही है, लेकिन भाव बढ़ाएँ तो कमाई हो। जब भाव बढ़ाएँ तो उससे दूसरे का मन दुःखी होता है, तो उससे अपने को नुकसान होता है क्या ?

दादाश्री : आप भाव बढ़ाओगे तो (दूसरे को) दुःख होगा। भाव बढ़ाते नहीं हो, तो कोई परेशानी नहीं है। इसमें आप कर्ता होकर करो, तो दुःख होगा और यदि व्यवस्थित कर्ता समझोगे तो आपकी कोई जिम्मेदारी नहीं है। ‘व्यवस्थित कर्ता है,’ वह स्वीकार करो, समझो। सचमुच तो आपकी जोखिमदारी नहीं है। मैंने आपको ऐसी स्टेज (भूमिका) पर रखा है कि, आपकी जोखिमदारी बंद हो जाती है। जोखिमदारी का एन्ड (अंत) होता है। इसलिए कर्म करने के बावजूद भी अकर्म स्थिति पर रख दिया है आपको।

फिर भी आपकी इच्छा ऐसी है कि ‘ऐसी अकर्म की स्थिति पर रख दिया है, लेकिन हम तो ऐसे हैं कि कर सकते हैं।’ यदि आप कर्ता बनोगे तो बंधन होगा! यह तो जिन्हें ज्ञान देता हूँ उनके लिए है। दूसरे सब तो कर्ता हैं ही। मेरे ज्ञान को समझकर और पाँच आज्ञा समझे तो निबेड़ा आए।

प्रश्नकर्ता : हम कर्ता नहीं हैं लेकिन हमारे

उस कर्म में भाग लेने से दूसरे को दुःख पहुँचता है, अपने कर्म से।

दादाश्री : हम यानी कौन ? हू (who) ? चंदूभाई या शुद्धात्मा ?

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई।

दादाश्री : आप तो शुद्धात्मा हो न ?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो चंदूभाई कर्ता हैं, उससे आपको क्या लेना-देना ? ‘आप’ जुदा और चंदूभाई जुदा।

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई कर्ता बनकर तन्मयाकार हो जाते हैं। तब पता चलता है कि सामनेवाली पार्टी का मन दुःखी हो रहा है।

दादाश्री : तो फिर चंदूभाई को कहना है कि ‘भाई, माफी माँग लो, क्यों ऐसे दुःखी किया?’ लेकिन ‘आपको’ माफी नहीं माँगनी है। जिसने अतिक्रमण किया, उसे प्रतिक्रमण करना है। यदि चंदूभाई अतिक्रमण करे तो प्रतिक्रमण उससे करवाना है। यदि हमारे दोष किसी को नुकसान पहुँचा रहे हों तो ‘हमें’ ‘चंदूभाई’ से कहना है कि, ‘प्रतिक्रमण करो।’ किसी को किंचित्मात्र भी दुःख देकर कोई मोक्ष में नहीं गया है।

प्रश्नकर्ता : क्या मानसिक पछतावा करना ही प्रतिक्रमण है ?

दादाश्री : जैसे कहा गया है वैसा करो। ‘धौल

दादावाणी

लगाने से उसे दुःख हुआ, तो अब फिर से धौल नहीं लगाऊंगा, मेरी भूल हुई,' इस तरह पछतावा करो। या फिर अगर डाँटा है तो, 'मैंने उसे दुःख दिया, तो फिर से नहीं डाँटूँगा,' ऐसे (पछतावा) करो। 'इस वाणी से जिन-जिन लोगों को दुःख पहुँचे हों उन सब से क्षमा माँगता हूँ,' इस तरह से प्रतिक्रमण कर सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब यह है कि प्रतिक्रमण करते रहना है और धीरे-धीरे अपनी सभी आदतें चली जाएँगी न?

दादाश्री : प्रतिक्रमण से सब चला जाता है।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण के पीछे जितना ज़ोरदार भाव होगा, उतना...

दादाश्री : भाव से, शब्द भले ही आएँ या न आएँ, उसमें कोई बात नहीं लेकिन सच्चे दिल से होना चाहिए।

टोक सकते हैं लेकिन कहना आना चाहिए

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में यदि कोई गलत कर रहा हो तो उसे टोकना पड़ता है, तो ऐसा करना चाहिए या नहीं?

दादाश्री : व्यवहार में टोकना चाहिए लेकिन वह अहंकार सहित होता है।

प्रश्नकर्ता : टोकेंगे नहीं तो क्या वह सिर पर चढ़ जाएगा?

दादाश्री : टोकना तो पड़ता है, लेकिन कहना आना चाहिए। कहना नहीं आता, व्यवहार नहीं आता इसलिए अहंकार सहित टोकते हैं। इसलिए फिर बाद में उसका प्रतिक्रमण करना। आप सामनेवाले को टोकोगे तो उसे बुरा तो लगेगा, लेकिन उसका प्रतिक्रमण करते रहोगे तो छह महिने, बारह महिने में ऐसी वाणी निकलेगी कि सामनेवाले को मीठी लगेगी। आजकल तो टेस्टेड (परीक्षण की हुई) वाणी की ज़रूरत है। 'अनटेस्टेड' वाणी बोलने का

अधिकार नहीं है। इस प्रकार प्रतिक्रमण करोगे तो चाहे कैसा भी होगा, फिर भी (व्यवहार) ठीक हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : कई बार सामनेवाले के हित के लिए उसे टोकना पड़ता है, रोकना पड़ता है, तो उस समय यदि उसे दुःख पहुँचे तो?

दादाश्री : हाँ, कहने का अधिकार तो है लेकिन कहना आना चाहिए। यह तो यदि भाई आए तो उसे देखते ही कहेगा कि 'तू ऐसा है और तू वैसा है', तो वहाँ अतिक्रमण हुआ कहलाता है। सामनेवाले को दुःख हो जाए ऐसा लगे तो आपको कहना है, 'चंदूभाई प्रतिक्रमण करो। अतिक्रमण क्यों किया? फिर से ऐसा नहीं कहूँगा और जो कह दिया उसके लिए पश्चाताप करता हूँ।' इतना प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

स्पेशल तरीके निकाल करने के

प्रश्नकर्ता : यदि ऑफिस में हमारे हाथ के नीचे कोई व्यक्ति हो और वह टाइम पर ऑफिस नहीं आता है अथवा तो ऑफिस का जो काम है, उसे ठीक से नहीं करता, तो अब उस फाइल का हम समभाव से *निकाल* (निपटारा) करने जाएँ तो फ़र्ज़ के तौर पर उसे डाँटना भी पड़ता है। तो फिर उसका प्रत्याघात हमें वापस मिलनेवाला ही है, तो क्या उससे भी हमें कर्मबंधन होता है?

दादाश्री : यदि ज्ञान लिया हो न, तो कर्मबंधन नहीं होगा। लेकिन प्रत्याघाती इफेक्ट न पड़े, उतना आपको संभालना पड़ेगा। क्योंकि वह मूर्ख (नासमझ) है, इसलिए प्रत्याघाती इफेक्ट ले लेगा। इसलिए एक कागज़ पर लिखकर आपको उससे कहना है, 'भाई, यह पढ़कर मुझे वापस दे दे।' आप टेबल के पास जाकर कहना कि 'पढ़, दो बार पढ़ फिर मुझे वापस दे।' इसका भावार्थ आपकी समझ में आया? ये सभी सेन्सिटिव (संवेदनशील) माइन्डवाले हैं इसलिए

उत्तेजित हो जाते हैं, फिर टेढ़े चलते हैं। यदि हम तुझे डाँटे तो तू क्या करेगा?

प्रश्नकर्ता : कुछ नहीं होगा, अंदर बिल्कुल भी भाव नहीं बिगड़ेगा।

दादाश्री : हमारा स्याद्वाद होता है। हम इसे कह-कहकर मारते हैं कि 'भाई, अब तुझे ठीक लगती है यह बात?' और उसे ऐसा कह-कहकर स्टेपिंग से चढ़ाते हैं। हमारा सेन्सिटिव नहीं रहता इसमें। जहाँ बुद्धि होती है, वहाँ सेन्सिटिवनेस होती है और सेन्सिटिव मतलब उत्तेजना, और उत्तेजित होने पर सामनेवाला इंसान बैर बाँधता है। मतलब जहाँ उत्तेजना है, उन लोगों को यदि दूसरी तरह से कहना नहीं आए तो एज़ फार एज़ पॉसिबल (शक्य हो तब तक) लिखकर देना। लिखने में उत्तेजना नहीं होती। सामनेवाले को आघात लगे ऐसी उत्तेजना नहीं होती। लिखकर आप कहना, 'ले पढ़ ले। तुझे दंड दूँगा, तुझे सस्पेन्ड कर दूँगा।' आपको उसे वहाँ ऐसा कुछ कहना चाहिए। उसमें हर्ज नहीं है और अंदर से भाव कैसा रखना है कि 'उसका बिगड़े नहीं।'

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो ठीक है।

दादाश्री : अंदर से एक ओर ऐसा रखना है कि उसका बिगड़े नहीं और दूसरी ओर कहना भी चाहिए, वर्ना गलत रास्ते चला जाएगा।

हमें उसे बता देना चाहिए कि 'मैं अगली बार एक्शन लेनेवाला हूँ,' और एक्शन ऐसा लेना चाहिए कि एक्शन लेने के बाद फिर से पलटा जा सके। ऐसी स्थिति तो रखनी चाहिए। आपको सारे प्रयत्न करने हैं और जब तक आप पलटनेवाली स्थिति रखेंगे, तब तक आपका गुनाह नहीं माना जाएगा। आपकी नीयत उसका खराब करने की नहीं है। उसका अच्छा करने की है, उतना ही देखा जाता है। फिर चाहे आपके हाथों कंडम हो जाए (उसके पर कोई कार्यवाही की), तो भी उसकी कीमत नहीं है।

भगवान को बाहर बिठाकर फ़र्ज़ निभाओ

प्रश्नकर्ता : फ़र्ज़ अदा करते समय यदि गलत हो गया हो, तो वह बताने के लिए ज़रा सख्त कदम लिया जाए, तब गलत करनेवाले को दुःख होता है। शायद हमारे लिए मन में घृणा भी होने लगे, तो वहाँ क्या करना चाहिए? कैसी भावना करनी चाहिए?

दादाश्री : जो भी व्यक्ति हों, उसके शुद्धात्मा को बाहर बिठाकर, आपको कहना चाहिए कि, 'देहधारी व्यक्ति के मन-वचन-काया का योग, भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्म से भिन्न ऐसे हे शुद्धात्मा!' 'बाहर बैठिए। यह पुद्गल गुनाह कर रहा है, इसलिए मुझे इस पुद्गल को ज़रा सीख देनी है।' तो फिर हर्ज नहीं है! और सीख तो देनी ही पड़ेगी न! सीख दिए बगैर चलेगा नहीं। फ़र्ज़ से बंधे हुए हैं न! बैंक की रक्षा करनेवाले ये जो चौकीदार होते हैं, वे सभी को (अंदर) जाने दें तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : चोरी ज़्यादा होगी।

दादाश्री : हाँ, ड्यूटीवाला जॉब। फ़र्ज़ तो निभाना ही चाहिए। तो फिर हर्ज नहीं है, लेकिन (शुद्धात्मा) भगवान को बाहर बिठाना है!

प्रश्नकर्ता : वह सामनेवाला व्यक्ति यदि हमारे प्रति घृणा करे, तो हमें कुछ नहीं होगा न?

दादाश्री : आपको कुछ नहीं। उसके आत्मा को बाहर बिठाया मतलब आपको कुछ लेना-देना नहीं। और फिर यदि घृणा करेगा न, तो वह खुद के आत्मा के बगैर करेगा, उसमें बरकत नहीं होती न! आत्मा बाहर बैठा है! आत्मा होकर करे तब ज़िम्मेदारी आती है।

स्वरूप में रहकर फ़र्ज़ निभाओ

प्रश्नकर्ता : आज यदि कोई आड़ाई (अहंकार का टेढ़ापन) करे, तो हमें सजा देने की सत्ता नहीं है, लेकिन सजा दिलवाने के लिए अपने उच्च

पदाधिकारी से रिपोर्ट करते हैं। अब उच्च पदाधिकारी ने सजा दी लेकिन रिपोर्ट तो मैंने की थी। इसलिए निमित्त तो मैं बना न?

दादाश्री : नहीं, लेकिन मन में भाव अपने नहीं हैं न? यह तो चंदूभाई करते हैं न? तो आपको क्या करना है? चंदूभाई जो करे, वह देखते रहना है। जगत् तो चलता रहेगा। उससे डरना नहीं है। मन में ऐसे भाव रखने चाहिए कि किसी जीव को दुःख नहीं हो। फिर आपको अपना रूटीन करना है। जो रूटीन हो, उसमें आपको दखल नहीं करनी है, शंका-कुशंका नहीं करनी है। आपको अपने स्वरूप में रहना है। बाकी फ़र्ज तो निभाने ही पड़ेंगे न?

अंडरहैन्ड को धमकाया, तो करो प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : नौकरी के फ़र्ज निभाते हुए मैंने बहुत सख्ती से लोगों के अपमान किए थे, दुत्कार दिया था।

दादाश्री : उन सब के प्रतिक्रमण करने हैं। उसमें आपका खराब इरादा नहीं था। आपके खुद के लिए नहीं, सरकार के लिए था। अतः वह सिन्सियारिटी (वफादारी) कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : उस हिसाब से मैं बहुत खराब आदमी था, कितनों को तो दुःख हो गया होगा न?

दादाश्री : उसके लिए तो आपको इकट्ठा प्रतिक्रमण करना है कि मेरे इस सख्त स्वभाव को लेकर जो भी दोष हुए उनके लिए क्षमा माँगता हूँ। वह अलग-अलग नहीं करना है।

प्रश्नकर्ता : इकट्ठा प्रतिक्रमण करना है?

दादाश्री : हाँ, आपको ऐसा (प्रतिक्रमण) करना है कि 'मेरे इस स्वभाव को लेकर सरकार का काम करने में जो भी दोष हुए, लोगों को दुःख हो ऐसा किया, उसके लिए क्षमा माँगता हूँ।' ऐसा रोज़ बोलना है।

फ़र्ज निभाते हुए साथ में पश्चाताप करो

प्रश्नकर्ता : सर्विस के कारण किसी के साथ कषाय हो जाँ या करने ही पड़ें, तो उससे आत्मा पर कुछ असर होता है?

दादाश्री : नहीं, लेकिन फिर पछतावा होता है न?

प्रश्नकर्ता : फ़र्ज पूरे करने में कषाय करने पड़ें तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : आपकी बात ठीक है। ऐसा संपूर्ण संयम नहीं होता कि फ़र्ज पूरा करते समय भी संयम रह सके, फिर भी किसी को बहुत दुःख हो जाए तो मन में ऐसा होना चाहिए कि 'अरे, अपने हाथ से ऐसा नहीं हो तो अच्छा।'

प्रश्नकर्ता : लेकिन फ़र्ज तो अदा करना ही चाहिए न? ये पुलिसवाले क्या करते हैं?

दादाश्री : फ़र्ज तो अदा करना ही पड़ेगा, उसके बिना चलेगा नहीं। वह तो, दो-तीन चोर घूम रहे हों तो पुलिसवाले को पकड़ने ही पड़ेंगे, उसके बिना चलेगा ही नहीं। वह व्यवहार है। परंतु अब उसमें दो भाव रहते हैं, एक तो फ़र्ज पूरा करते समय क्रूरता नहीं रहनी चाहिए। पहले जो क्रूर भाव रहता था, वह अब नहीं रहना चाहिए। अपना आत्मा (प्रतिष्ठित आत्मा) बिगड़े नहीं, वैसे रखना चाहिए। वर्ना फ़र्ज तो अदा करना ही पड़ेगा, गुरखा हो उसे भी फ़र्ज अदा करना पड़ता है, और दूसरी तरफ मन में ऐसा पश्चाताप रहना चाहिए कि ऐसा काम अपने हिस्से में नहीं आए तो अच्छा!

समझकर-समझाकर लाओ हल

प्रश्नकर्ता : कभी डपट लगानी पड़ती है, नहीं तो उसे निकाल देना पड़ता है, डिसमिस करना पड़ता है, बाद में हमें मन में दुःख होता है कि उसके बच्चे भूखे मरेंगे।

दादाश्री : लेकिन ऐसा है न, हमें उसे चेतावनी देनी है कि भई, मुझे तुझे निकालना पड़ेगा, डिसमिस करना पड़ेगा, इसलिए तू सावधानी से काम कर।

प्रश्नकर्ता : ऐसे सावधान करते हैं, उसे लिखकर देते हैं कि, 'तू काम नहीं करता है, तुझे डिसमिस कर दिया जाएगा। तेरा काम संतोषजनक नहीं है।' ऐसा सब लिखकर देते हैं।

दादाश्री : फिर?

प्रश्नकर्ता : फिर भी नहीं सुधरता इसलिए फिर उसे निकालना पड़ता है। और निकाल देते हैं तब फिर उसके बच्चे बेचारे दुःखी होकर रोते-रोते घर आते हैं। तभी हमें दुःख होता है। उसे भी दुःख तो होता है न?

दादाश्री : दुःख बंद करना हो तो रहने देना। काम खुद कर लेना।

सामनेवाले को चोट नहीं पहुँचे उस तरह से डाँटो

प्रश्नकर्ता : कर्मचारी अगर गलत करे तो अधिकारी को डाँटना तो पड़ेगा न? डाँटने से उसे दुःख तो होता है न?

दादाश्री : ऐसा है न, डाँटना बहुत ही बड़ा जोखिम है। यानी अपना हाथ जले नहीं और सामनेवाले को लगे नहीं, इस तरह डाँटना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : खुद अपने आप को ही सबकुछ (नुकसान) करता है।

दादाश्री : तो और क्या? जाने-अनजाने उसके अहंकार को 'वह' करें, (छेड़ें) तो वह (बैर) बाँधता है और फिर बैर का जो फल ऐसा आता है कि जिंदगी भूला दे। ऐसा दुःख आता है। किसी जीव को तकलीफ नहीं देनी चाहिए। वह यदि तुम्हें तकलीफ दे रहा है तो वह तुम्हारा हिसाब है अतः जमा कर लो। और नए सिरे से देना बंद कर दो यदि इससे छूटना है तो।

एडजेस्टमेंट लेकर दुःख टालो

प्रश्नकर्ता : हम एक 'लेवल' तक आ गए और दूसरे लोग उस 'लेवल' पर नहीं हैं। अब उनके साथ काम तो करना ही है, इसलिए कई बार वहाँ फिर मेल नहीं खाता।

दादाश्री : मेल तो नहीं खाएगा न! मेल खाएगा नहीं, लेकिन हमें उसके साथ एडजस्ट होना है। इसीलिए मैंने कहा है न कि वहाँ 'समभाव से निकाल' करना। मन में तय रखो कि 'मुझे समभाव से निकाल करना है।' तो उस पर असर पड़ेगा और उसका मन सुधर जाएगा। लेकिन अगर तुम मन में तय करो कि इसे ऐसा कर डालूँ या वैसा कर डालूँ, तो उसके मन में वैसा ही रिएक्शन (प्रतिक्रिया) आएगा। आप जिस 'स्टेप' पर हो, वह स्थिति खुद के लिए है, औरों पर वह स्थिति लागू नहीं की जा सकती। वे अलग 'स्टेप' पर हैं। अतः किसी इंसान पर दबाव नहीं डालना चाहिए। उसका 'ऑब्जेक्शन' नहीं लेना चाहिए।

ऐसा है न, हमारे पास अधिक 'लाइट' हो तो उसे 'डिम' किया जा सकता है, लेकिन 'डिम' लाइटवाला बढ़ा नहीं सकता। अपनी लाइट ज्यादा है न, तो 'डिम लाइट' करके उसके साथ बैठना। आपकी 'लाइट' बढ़ जाए तो इस भाई के साथ किस तरह काम करें, वह फिट कर देते हो न? ऐसा सब जगह 'फिट' कर लेना चाहिए। आपको 'फिट' कर लेना है। अनंत शक्तियाँ हैं! आप 'दादा' का नाम लेकर कहो कि 'हे दादाजी, मुझे फिट हो जाए,' तो 'फिट' हो जाएगा तुरंत। और आपके भाव में पक्का है कि किसी को किंचित्मात्र दुःख न हो। ऐसा आपने तय किया होगा तो उसे दुःख होगा ही नहीं। अतः हमें तय करना चाहिए।

दुःख का असर झलकता है चेहरे पर

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले इंसान को दुःख हुआ वह कैसे पता चलता है?

दादावाणी

दादाश्री : वह तो उसका चेहरे से तुरंत पता चल जाता है। चेहरे पर से हास्य चला जाता है, उसका चेहरा बिगड़ जाता है। इसलिए तुरंत ऐसा पता चल जाता है कि सामनेवाले पर असर हुआ है। पता नहीं चलता ?

प्रश्नकर्ता : चलता है।

दादाश्री : इंसान में तो इतनी शक्ति होती ही है कि सामनेवाले को क्या हुआ, वह पता चल जाता है!

प्रश्नकर्ता : लेकिन कई ऐसे पक्के होते हैं कि जो चेहरे पर एक्सप्रेसन (हावभाव) नहीं आने देते।

दादाश्री : तो भी हमें पता चल जाता है कि ये शब्द भारी निकले हैं अपने, इसलिए उसे लगेंगे तो जरूर। इसलिए ऐसा मानकर प्रतिक्रमण कर देना है। यदि भारी निकला हो तो क्या हमें पता नहीं चलेगा कि उसे लगा होगा ?

प्रश्नकर्ता : पता चलता है न।

दादाश्री : वह प्रतिक्रमण करना भी सामनेवाली व्यक्ति के लिए नहीं है। अपने अभिप्राय से दूर होने के लिए प्रतिक्रमण है। खुद के अभिप्राय से दूर होने के लिए है। प्रतिक्रमण यानी क्या ? पुराने अभिप्रायों से दूर होने के लिए है और प्रतिक्रमण से क्या होता है कि सामनेवाले को होनेवाला असर नहीं होता, बिल्कुल भी नहीं होता।

दुःख के दाग साफ करने पड़ेंगे

प्रश्नकर्ता : अपने निमित्त से जो दुःख हो जाता है, वह सामनेवाले के अहंकार को हो जाता है ?

दादाश्री : हाँ, अहंकार को दुःख हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो प्रतिक्रमण की क्या जरूरत है ? वापस रिलेटिव में पड़ने की क्या जरूरत है ?

दादाश्री : लेकिन उसे जो दुःख हुआ, उसका दाग अपने रिलेटिव पर रहा न! उस रिलेटिव को दागवाला नहीं रखना है। अंत में स्वच्छ करना पड़ेगा। यह कपड़ा स्वच्छ रख छोड़ना है। क्रमण में हर्ज नहीं है। क्रमण यानी यों ही मैला हो जाए उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन एकदम जो दाग लग जाए, उसे तो धो देना है।

प्रश्नकर्ता : यानी 'रिलेटिव' को स्वच्छ रखना जरूरी है ?

दादाश्री : ऐसा नहीं है। 'रिलेटिव' पुराना होगा, कपड़ा पुराना होने में हर्ज नहीं है। क्रमण द्वारा भी एकदम दाग लग जाए तो अपने विरुद्ध कहलाएगा। इसलिए वह दाग धो डालना चाहिए। अतः ऐसे अगर अतिक्रमण हो जाए तो भी प्रतिक्रमण करो। और वह कभी-कभार होता है, रोज नहीं होता। और यदि प्रतिक्रमण नहीं हो पाए तो कोई बहुत बड़ा गुनाह नहीं है, लेकिन प्रतिक्रमण करना अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : ये अतिक्रमण करने की सत्ता अपने हाथ में नहीं है, तो प्रतिक्रमण करने की (सत्ता) अपने हाथ में कैसे हो सकती है ?

दादाश्री : अतिक्रमण की सत्ता नहीं है। प्रतिक्रमण तो भीतर चेतावनी देता है, भीतर जो चेतन है न, प्रज्ञाशक्ति वह सावधान करती है।

अपनी भूल से ही सामनेवाले को दुःख होता है

प्रश्नकर्ता : दादा, अब घर के व्यवहार में कभी-कभार मेरी भूल का मुझे पता चलता है और कई बार मेरी कोई भूल ही नहीं होती, 'उनकी' (माँ-बाप की) ही गलती है ऐसा लगता है।

दादाश्री : तुझे ऐसा लगता है फिर प्रतिक्रमण करते वक्त ?

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर जब 'उन्हें' आक्रोश-

दादावाणी

आकुलता ज़रा ज़्यादा हो जाए तब लगता है कि अब हमारे निमित्त से ऐसा नहीं होना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, लेकिन 'मेरी भूल हो गई' ऐसे करके प्रतिक्रमण करना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे मेरी खुद की भूल लगती ही नहीं। मुझे तो उनकी ही भूल लगती है।

दादाश्री : भूल हुए बगैर किसी को दुःख होता ही नहीं न! अपनी भूल हो जाए तभी किसी को दुःख होता है।

प्रश्नकर्ता : मुझे तो ऐसा लगता है कि उनकी प्रकृति ही ऐसी है, इसलिए उन्हें ऐसा लगता है।

दादाश्री : यों प्रकृति नहीं मान सकते। ये सब लोग कहते हैं कि 'अच्छी प्रकृति है,' यदि सिर्फ तू ही कहे कि 'बुरी है' तो वह भी ऋणानुबंध है, हिसाब है।

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसा लगता है कि उन्हें किच-किच करने की आदत ही हो गई है।

दादाश्री : इसीलिए वह तेरी भूल है। 'मुझ से मेरे माँ-बाप को क्यों दुःख हुआ? उन्हें दुःख नहीं होना चाहिए।' अब मन में ऐसा रहना चाहिए कि 'सुख देने आया हूँ, मेरी ऐसी कौन सी भूल हो गई कि माँ-बाप को दुःख हुआ?' इसलिए उसके लिए प्रतिक्रमण करना चाहिए।

यदि कह दिया जाए तो उसे प्रतिक्रमण से धो डालो

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण से वे सारे दोष माफ हो जाएँगे न?

दादाश्री : दोष खड़े रहेंगे लेकिन जली हुई रस्सी जैसे दोष खड़े रहेंगे। इसलिए अगले जन्म हमने 'ऐसे' किया कि सब झड़ जाएँगे, प्रतिक्रमण से। उनमें से रसकस खत्म हो जाएगा।

कर्ता का आधार हो तभी कर्म बंधता है। अब

आप कर्ता नहीं रहे। इसलिए पिछले कर्म थे, वे फल देकर जाएँगे। नए कर्म नहीं बंधते।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, फिर सामनेवाले व्यक्ति पर क्या 'इफेक्ट' होता है?

दादाश्री : वह हमें नहीं देखना है। प्रतिक्रमण करते हैं, इसलिए फिर हमें नहीं देखना है। प्रतिक्रमण ज़्यादा करने हैं।

प्रश्नकर्ता : मानो कुछ कह दिया तो उसे मेरी तरफ से तो दुःख पहुँच गया, ऐसा कहलाएगा न?

दादाश्री : हाँ, वह दुःख तो अपनी इच्छा के विरुद्ध हुआ है न, इसलिए हमें प्रतिक्रमण करना है। यही उसका हिसाब होगा वह चुक गया।

प्रश्नकर्ता : हम कुछ कहें तो उसे मन में बुरा भी लगता है न?

दादाश्री : हाँ, वह तो बुरा लगेगा। गलत हुआ हो तो गलत लगेगा न! जो हिसाब चुकाना है, वह तो चुकाना ही पड़ेगा न! उसमें कोई चारा ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : अंकुश नहीं रहता है, इसलिए वाणी द्वारा निकल जाता है।

दादाश्री : हाँ, वह तो निकल जाता है। लेकिन निकल जाता है, उस पर हमें प्रतिक्रमण करना है, बस और कुछ नहीं। पश्चाताप करके और ऐसा फिर से नहीं करूँगा, ऐसा तय करना चाहिए।

फिर फुरसत में हों तब उसके प्रतिक्रमण करते ही रहने हैं। उससे सब नरम हो जाएगा। जो भी सख्त फाइलें हैं, उतनी ही नरम करनी हैं।

प्रतिक्रमण वह भगवान का फोन

प्रश्नकर्ता : किसी को दुःख पहुँचे, ऐसी वाणी निकल गई और उसका प्रतिक्रमण नहीं करें तो क्या होता है?

दादावाणी

दादाश्री : ऐसी वाणी निकल गई तो उससे तो सामनेवाले को चोट पहुँचती है, इसलिए उसे दुःख होता है। सामनेवाले को दुःख हो जाए, वह हमें कैसे पसंद आएगा भला ?

प्रश्नकर्ता : उससे बंधन होता है ?

दादाश्री : यह नियम के विरुद्ध कहलाता है न ? नियम से विरुद्ध तो है न ? नियम से विरुद्ध तो होना ही नहीं चाहिए न ? हमारी आज्ञा का पालन करोगे न, तो वह धर्म कहलाता है। और प्रतिक्रमण करने में नुकसान क्या है हमें ? माफी माँग लो और 'फिर से नहीं करूँगा,' ऐसे भाव भी रखने हैं। बस इतना ही ! संक्षेप में कर देना है। इसमें भगवान क्या करेंगे ? उसमें कहीं न्याय खोजना चाहिए ? यदि व्यवहार को व्यवहार समझे, तो न्याय को समझ गया ! पड़ोसी उल्टा क्यों बोल गए ? क्योंकि अपना व्यवहार ऐसा था। और यदि आपसे उल्टी वाणी निकले तो वह सामनेवाले के व्यवहार के अधीन है। लेकिन हमें तो मोक्ष में जाना है, इसलिए उसका प्रतिक्रमण कर लेना है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन तीर छूट गया उसका क्या ?

दादाश्री : वह व्यवहाराधीन है।

प्रश्नकर्ता : ऐसी परंपरा रहे तो बैर बढ़ेगा न ?

दादाश्री : नहीं, इसलिए तो हम प्रतिक्रमण करते हैं। प्रतिक्रमण सिर्फ मोक्ष में ले जाने के लिए ही नहीं है, बल्कि वह तो बैर रोकने के लिए भगवान के वहाँ लगाया गया फोन है। प्रतिक्रमण में कच्चे पड़े तो बैर बंधेगा। जब भूल समझ में आ जाए तब तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लो। उससे बैर बंधेगा ही नहीं। सामनेवाले को बैर बाँधना हो तो भी नहीं बंधेगा। क्योंकि हम सामनेवाले के आत्मा को सीधा ही फोन पहुँचाते हैं। व्यवहार निरुपाय है। सिर्फ हमें मोक्ष में जाना हो तो प्रतिक्रमण करो। जिसे स्वरूप ज्ञान ना

हो उसे व्यवहार-व्यवहार रूप से ही रखना हो तो, 'सामनेवाला उल्टा बोला, वही करेक्ट हैं,' ऐसा ही रखो। लेकिन मोक्ष में जाना हो तो उसके प्रतिक्रमण करो, नहीं तो बैर बंधेगा।

विधि की बाड़ से दुःख नहीं होता

प्रश्नकर्ता : वाणी बोलते समय किस प्रकार की जागृति रखनी चाहिए ?

दादाश्री : जागृति ऐसी रखनी है कि ये बोल बोलने से किस किसका प्रमाण किस तरह से आहत हो रहा है, उसे देखना है।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले के साथ बात-चीत करते समय क्या ध्यान रखना चाहिए ?

दादाश्री : एक तो यदि 'उनके' साथ बात करनी हो तो आपको उनके 'शुद्धात्मा' से अनुमति लेनी पड़ेगी कि 'उन्हें ठीक लगे ऐसी वाणी बोलने की मुझे परम शक्ति दीजिए।' फिर आपको दादा से अनुमति लेनी पड़ेगी। इस तरह अनुमति लेकर बोलेंगे तो सीधी वाणी निकलेगी। यदि यों ही लापरवाही से बोलते रहेंगे तो सीधी वाणी कैसे निकलेगी ?

प्रश्नकर्ता : ऐसे बार-बार कहाँ उनकी अनुमति लेने जाएँ ?

दादाश्री : बार-बार तो जरूरत भी नहीं पड़ती न ! जब ऐसी टेढ़ी फाइलें आ जाएँ तभी जरूरत पड़ती है।

प्रश्नकर्ता : यानी फाइलों के मिलने से पहले, उनके साथ बात-चीत करने से पहले हमें ऐसी अनुमति ले लेनी पड़ेगी ?

दादाश्री : ले ही लेनी है। उसके बाद ही बात-चीत करो, वरना अच्छी वाणी नहीं निकलेगी। क्योंकि जैसी भरी होगी न, वैसी ही निकलेगी। यदि मिनेकिज्म सेट कर लिया होगा न तो फिर मिनेकिज्म के आधार पर परिवर्तन हो जाएगा। यह

अंदर तो निरा मिकेनिज़म है। मिकेनिज़म सेट हो गया तो फिर अपने आप ही चेन्ज (परिवर्तन) होकर निकलेगी।

वाणी से दुःख पहुँचाने के करवाओ प्रतिक्रमण

वाणी कठोर स्वरूप से निकले या सुंदर स्वरूप से निकले, तो भी 'मैं' उदासीन ही हूँ। वाणी कठोर स्वरूप से निकले और सामनेवाले को दुःख हो तो उस अतिक्रमण का प्रतिक्रमण 'मैं' करवाता हूँ। यदि आप खुद उल्टा बोलो और फिर आप प्रतिक्रमण करो तो फिर आपको आपके बोल का दुःख नहीं रहेगा। इस तरह सब हल आ जाता है। वाणी से जैसा कुछ बोला जाता है, उसके हम 'ज्ञाता-दृष्टा'। लेकिन जिसे वह वाणी दुःख पहुँचाती है, उसका प्रतिक्रमण हमें बोलनेवाले से करवाना पड़ेगा।

उपाय, तरछोड़ के परिणामों के सामने

प्रश्नकर्ता : किसी भी इंसान को तरछोड़ (तिरस्कार सहित दुत्कारना) लगाने के बाद पछतावा हो तो वह क्या कहलाता है ?

दादाश्री : पछतावा होने से तो फिर थोड़े समय में तरछोड़ लगाने की आदत छूट जाती है। तिरस्कार करने के बाद पछतावा नहीं करे और ऐसा माने कि 'मैंने कितना अच्छा किया,' तो वह नर्क में जाने की निशानी है। गलत करने के बाद पछतावा तो करना ही चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कौन सा उपाय करना चाहिए ताकि तरछोड़ के परिणाम भुगतने की बारी न आए ?

दादाश्री : तिरस्कार के लिए अन्य कोई उपाय नहीं है, सिर्फ प्रतिक्रमण ही करते रहने हैं। जब तक सामनेवाले का मन वापस नहीं बदले, तब तक करने हैं। और यदि प्रत्यक्ष मिल जाए तो फिर से मीठा बोलकर क्षमा माँगनी है कि 'भई, मुझ से बहुत भूल हो गई। मैं तो मूर्ख हूँ, बेअक्ल हूँ।' इससे सामनेवाले के घाव भरते जाएँगे। हम अपनी खुद की

बुराई करें तो सामनेवाले को अच्छा लगता है, तब उसके घाव भरते हैं।

'हमें' पिछले जन्मों में लगाई गई तरछोड़ के परिणाम दिखते हैं। इसलिए तो मैं कहता हूँ कि हम से किसी को तरछोड़ न लग जाए। मज़दूर को भी तरछोड़ न लगे। अरे! अंत में साँप होकर भी बदला लेगा। तरछोड़ छोड़ती नहीं, एकमात्र प्रतिक्रमण ही बचा सकता है।

हमसे किसी को थोड़ा भी दुःख हो ऐसी वाणी निकलती ही नहीं। सामनेवाला तो भले ही कैसा भी पागलपन करे, उसे तो कुछ पड़ी ही नहीं है न! जिसे छूटना है, उसे ही पड़ी है न!

दुःख के प्रमाण के अनुसार करने हैं प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : किसी को दुःख पहुँचाने के बाद हम प्रतिक्रमण कर लें, लेकिन यदि उसे ज़बरदस्त आघात व ठोकर लगी हो तो उससे हमें कर्म नहीं बंधेगा ?

दादाश्री : हमें उसके प्रतिक्रमण करते रहना है और उसे जितना दुःख हुआ है, उतने ही प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे।

हमें तो प्रतिक्रमण करते रहना है, दूसरी कोई ज़िम्मेदारी अपनी नहीं है। और यदि वे जीवित हों तो हम उन्हें भी कह सकते हैं कि, 'इस चंदूभाई (फाइल नंबर.१) में अक्ल नहीं है, इसलिए आपको ऐसा किया, इसलिए ऐसा हुआ होगा। आप इसे माफ करना।' अपनी अक्ल कम है, ऐसा दिखाया कि सामनेवाला खुश हो जाता है। ऐसा कहेंगे न तो वह खुश हो जाएगा। हाथ टूट जाने के बाद भी यदि कभी इतना कहें न तो हाथ टूट जाने की हानि को (वह) नहीं गिनता। वह खुश हो जाता है। क्योंकि (हाथ) टूट जाना वह डिसाइडेड (निश्चित) था लेकिन निमित्त हम थे। तो निमित्त बने, इसलिए चुका दिया। राशि जमा-उधार हो गई।

दादावाणी

फिर प्रतिक्रमण तो करवाते रहने हैं। जितने प्रतिक्रमण करेगा उतना भीतर मज़बूत होगा। यदि विचार बिगड़ा तो दाग लगेगा, इसलिए विचार मत बिगाड़ना। यह समझ लेना है। अपने सत्संग में तो खास ध्यान रखना है कि विचार न बिगड़ें। विचार बिगड़ते हैं तो सब बिगड़ जाता है। विचार आया कि मैं गिर जाऊँगा तो गिरा। इसलिए विचार आते ही तुरंत प्रतिक्रमण करो, आत्मस्वरूप हो जाओ। यदि ऐसा हो कि आपके मन को चुभे तो उसका प्रतिक्रमण करना है।

तू बोलेगा तो शक्ति मिलेगी

प्रश्नकर्ता : ऐसा कुछ नहीं करना है कि मुझ से उसे दुःख हो जाए, फिर भी उसे दुःख हो जाता है। आप ऐसी कृपा करो कि मेरे परमाणु उछलें नहीं।

दादाश्री : आज आपको आशीर्वाद देंगे। आपको उससे माफी माँगते रहना है। पिछले जन्म में उसे बहुत मारती रहती थी।

प्रश्नकर्ता : बहुत हो चुका। मेरी बड़ी गाँठ है यह।

दादाश्री : हाँ, उसका तो कुछ करना पड़ेगा न? उससे बार-बार माफी माँगते रहना है। फुरसत मिलते ही, 'क्षमा माँगती हूँ' यों प्रतिक्रमण करना। संक्षेप में करना है। उसके साथ अतिक्रमण किया है इसलिए प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। बार-बार मारा है इसलिए?

प्रश्नकर्ता : मैं उसके बहुत प्रतिक्रमण करती हूँ।

दादाश्री : बहुत करना। 'मैं उससे क्षमा माँगती हूँ।' और 'हे दादा भगवान! मुझे उसे कुछ भी दुःख न देने की, त्रास न देने की शक्ति दीजिए।' ऐसा बार-बार माँगना। हम वह चीज़ देते भी हैं। तू बोलेगी तो मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : रोज़ माँगूँगी।

दादाश्री : ठीक है।

प्रश्नकर्ता : अपने से उन्हें किंचित्मात्र दुःख हो जाए तो यहाँ एकांत मिलने पर उनका प्रतिक्रमण कर लें, तो चलेगा?

दादाश्री : वह तो तुरंत ही, उसी घड़ी कर लेना चाहिए।

प्रतिक्रमण करना किसे कहा जाता है?

प्रश्नकर्ता : मन से, वाणी से, वर्तन से, झूठ बोलने से जो सारा दुःख पहुँचा है, उन सब के लिए आप की साक्षी में प्रतिक्रमण कर लें तो वह धुल जाएगा न?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करना किसे कहते हैं कि आप आमने-सामने करो, उनके रूबरू में करो या गोपनीय (अकेले में) करो लेकिन जब प्रतिक्रमण बोलें (उसकी सामनेवाले पर असर हो) तब जानना कि हमने प्रतिक्रमण किया है। हाँ, हम भी गोपनीय प्रतिक्रमण करते हैं, लेकिन वह प्रतिक्रमण तीसरे दिन बोलने लगे तब हमें मालूम हो जाता है (कि सामनेवाले को असर पहुँचा।) आप ऐसा मन में प्रतिक्रमण करो कि उन्हें पता न चले, फिर भी उन्हें आप के प्रति आकर्षण पैदा हो।

सामनेवाले के भाव बिगड़ें तब

प्रश्नकर्ता : मान लीजिए कि अपना कुछ भाव नहीं बिगड़ा हो लेकिन सामनेवाले के साथ बात चीत करते समय उसके चेहरे की रेखाएँ बदल गई, अपने लिए सामनेवाले का भाव बिगड़ गया, तो उसके लिए हमें किस प्रकार से प्रतिक्रमण करना चाहिए?

दादाश्री : हमें प्रतिक्रमण करना चाहिए। क्योंकि 'मुझ में (हमारे में) कौन से दोष हैं कि इसका भाव बिगड़ जाता है।' भाव नहीं बिगड़ना चाहिए। भाव शुद्धि ही रहनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यदि हम दो लोग बात कर रहे हों

और उसमें कोई तीसरा व्यक्ति अचानक आ जाए, अब उसने तो कुछ भी नहीं कहा है, यों ही खड़ा है, लेकिन उसके भाव बिगड़ जाएँ, चेहरे की रेखाएँ बदल जाएँ, और वह देखकर मुझे ऐसा लगे कि यह क्यों ऐसे भाव बिगाड़ रहा है? तो उसका प्रतिक्रमण किस प्रकार करना है?

दादाश्री : हम ऐसी जाँच करते हैं न कि सामनेवाले के भाव क्यों बिगड़े, तो वह गुनाह है। उस गुनाह के लिए हमें प्रतिक्रमण करना है। यदि सामनेवाले का चेहरा फूला हुआ दिखे तो वह आपकी भूल है। तब उसके 'शुद्धात्मा' को याद करके उसके नाम से माफी माँगते रहो तो ऋणानुबंध में से छूटा जा सकता है।

प्रतिक्रमण ही पुरुषार्थ

किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं होना चाहिए। यह तो अन्जाने में बेहद दुःख हो जाते हैं! सामनेवाले को दुःख नहीं हो उस तरह आप काम लो, तो वह क्रमण कहलाता है। लेकिन अतिक्रमण कब कहलाता है? आपको जल्दी हो और वह चाय पीने गया हो, फिर उसके आते ही तुरंत आप चिल्लाओ कि 'कहाँ गया था? नालायक है' वगैरह तो ऐसा करना अतिक्रमण कहलाता है। और वह आप से स्वाभाविक रूप से हो जाता है। उसमें आपकी कोई इच्छा नहीं होती।

अतिक्रमण होना स्वाभाविक है लेकिन प्रतिक्रमण करना अपना पुरुषार्थ है। ताकि जो किया है वह मिट जाए। लगा हुआ दाग प्रतिक्रमण करने से, तुरंत मिट जाता है।

एक कर्म भी कम हो जाए तो उलझनें दिनोंदिन कम होती जाएँगी। एक दिन में यदि एक कर्म कम करे तो दूसरे दिन दो कम कर सकता है, लेकिन यह तो रोज़ उलझनें पैदा ही करता रहता है और बढ़ाता ही जाता है! अंदर परिणति बदलते ही

एरंडी का तेल पीया हो वैसा चेहरा हो जाता है! दोष खुद का और भूल निकालता है औरों की, उससे अंदर की परिणति बदल जाती है। 'वीतराग' ऐसा कह गए हैं कि खुद का दोष ढूँढो और कुछ भी नहीं कह गए हैं। तू तेरे दोषों को पहचान और मुक्त हो जा। बस इतना ही तुझे मुक्तिधाम देगा। इतना ही काम करने को कहा है भगवान ने। और प्रतिक्रमण तो, नकद-कैश प्रतिक्रमण करने को कहा है।

प्रतिक्रमण धर्म

प्रतिक्रमण धर्म यानी क्या? आपने इनसे कहा कि 'आप खराब हो,' तब आपको प्रतिक्रमण करना पड़ेगा, कि मुझे नहीं बोलना चाहिए, वह बोल दिया। इसलिए भगवान से आलोचना करनी चाहिए। वीतराग को याद करके आलोचना करनी चाहिए कि 'भगवान मेरी भूल हो गई है। मैंने इस भाई को ऐसा कहा इसलिए उसका पछतावा करता हूँ। अब फिर से ऐसा नहीं करूँगा।' 'फिर से नहीं करूँगा,' उसे प्रत्याख्यान कहते हैं। भगवान का आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान, उतना ही पकड़ ले न, वह भी पूरा नकद, उधार नाम मात्र को भी नहीं रहने दे। आज का आज और कल का कल, जहाँ कहीं कुछ भी हो जाए तो वहीं पर नकद दे दे, तो अमीर बन जाएगा, तब फिर वैभव भोगेगा और मोक्ष में जाएगा! इन 'ज्ञानीपुरुष' का एक ही शब्द पकड़ ले तो बहुत हो गया!

शूट ऑन साइट से हो जाते हैं कर्म हल्के

अहंकार निर्मल करने के बाद फिर से क्रियाएँ करनी पड़ती हैं। कैसी क्रियाएँ करनी पड़ती हैं कि, सुबह आपकी बहू से कप-प्लेट टूट गए, तो आपने कहा कि 'तेरे में अक्ल नहीं है।' इससे उसे जो दुःख हुआ, उस वक्त हमें मन में ऐसा होना चाहिए कि 'यह मैंने उसे दुःख दे दिया।' वहाँ प्रतिक्रमण होना चाहिए। दुःख देना अतिक्रमण कहा जाएगा और अतिक्रमण पर यदि प्रतिक्रमण किया जाए तो वह मिट जाता है। वह कर्म हल्का हो जाता है।

यदि ऐसा आचरण करें कि उसे कुछ दुःख हो जाए तो वह अतिक्रमण कहलाता है और अतिक्रमण पर प्रतिक्रमण करना चाहिए। और ये जो बारह महिने में एक बार करते हैं वैसा नहीं बल्कि 'शूट ऑन साइट' होना चाहिए। तब जाकर ये दुःख जाएँगे वीतराग के कहे हुए मतानुसार यदि चलेंगे तो दुःख जाएँगे, वना दुःख जाएँगे नहीं।

यदि आप चोखे हो जाओगे तो सब चोखा हो जाएगा

अपने से दूसरों को दुःख होता है, ऐसा जो हमें दिखता है, वह हमारा सेन्सिटिवनेस का गुण है। सेन्सिटिवनेस एक प्रकार का अपना इगोइज्जम है। वह इगोइज्जम जैसे-जैसे विलय होता जाएगा, जैसे-जैसे हम से सामनेवाले को दुःख नहीं होगा। जब तक अपना इगोइज्जम हो तब तक सामनेवाले को दुःख होता ही है।

प्रश्नकर्ता : वह तो आपकी अवस्था की बात हुई! अब हमारे लिए प्रश्नों का हल आना चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, आना ही चाहिए।

प्रश्नकर्ता : परंतु इससे तो सिर्फ खुद के लिए ही हल आएगा न?

दादाश्री : खुद के लिए ही नहीं, हर एक के लिए धीरे-धीरे हल आना ही चाहिए। खुद के हल आ जाएँ तभी सामनेवाले का भी हल आएगा, ऐसा है। लेकिन खुद का 'इगोइज्जम' है तब तक सामनेवाले को नियम से असर होता ही रहेगा। वह 'इगोइज्जम' का विलय हो ही जाना चाहिए।

ये तो 'इफेक्ट्स' हैं सिर्फ! दुनिया में दुःख जैसी चीज़ ही नहीं है। यह तो 'रोंग बिलीफ' है सिर्फ। उसे सच्चा मानता है। अब उसकी दृष्टि से तो वह वास्तव में वैसा ही है न? इसलिए किसी भी प्रकार से असर हों ही नहीं, उसके लिए हमें कैसा बनना चाहिए? हमें शुद्ध हो जाना चाहिए। हम शुद्ध

हो गए तो बाकी का सब शुद्ध हुए बगैर रहेगा ही नहीं।

कोई अहंकार दुभाए तब

प्रश्नकर्ता : कई बार कोई आक्षेप लगाए तब अहंकार को ठेस लगती है, तब सामनेवाले से खुद को दुःख हो जाता है, उसकी बात कर रहा हूँ।

दादाश्री : उसे तो लेट गो कर लेना। यदि अपने अहंकार को ठेस लगे, तब तो बल्कि वह अच्छा है। आपसे यदि उसका अहंकार आहत हो जाए तो उसकी ज़िम्मेदारी आप पर है लेकिन यह तो बल्कि अच्छा है, अंदर का सब से बड़ा तूफान खत्म हुआ!

प्रश्नकर्ता : अंदर हमें वह सारी समझ रहती है कि यह अहंकार दुभ रहा है, ऐसा ध्यान भी रहता है, लेकिन तब भी वह घायल अहंकार दुःख देता है।

दादाश्री : वह (अपना अहंकार) दुःख दे तब समझना कि आज बहुत फायदा हुआ।

प्रश्नकर्ता : दादा ऐसा सब नहीं रहता।

दादाश्री : वह तो रहेगा, अभी नहीं रहे तो बाद में रहेगा। कभी न कभी तो ऐसा रहेगा ही न! अभी आपको आदत नहीं है इसलिए नहीं रहता। कड़वी चाय पीने की आदत नहीं है न, इसलिए फिर वह जब कहेगा कि 'ओहोहो! उसका तो स्वाद अच्छा है, चाय जैसा है,' तब अच्छा लगेगा। यह तो, कड़वी कभी पी नहीं है न, इसलिए शुरुआत में पीना अच्छा नहीं लगता। क्योंकि, कोई अहंकार को ठेस पहुँचाए वह तो अच्छा है। मन को ठेस पहुँचाए, तो उससे बहुत फायदा नहीं मिलता। अहंकार को ठेस पहुँचाए तो वह बहुत फायदेमंद है। आप यदि किसी के अहंकार को ठेस पहुँचाओ, तो वह बहुत बड़ा नुकसान है। आपको तो जो घाटा है, उसे खत्म करना है न? समझ में नहीं आया आपको?

प्रश्नकर्ता : आप जो कह रहे हैं, वह सब

समझ में है, लेकिन फिर भी वह (भीतर) दुःखता रहता है। वह नहीं दुःखे, उसके लिए क्या करना चाहिए ?

दादाश्री : वह तो उतना दुःख भुगतने का कर्म लिखा हुआ है, *अशाता* (दुःख परिणाम) वेदनीय भुगतनी हो न, तो होता रहेगा। तो उस दुःख भुगतनेवालों को हमें जानना है कि यह (फाइल नं-१) भुगत रहा है। हमने उसमें रुचि दिखाई कि कर्म चिपक जाएगा !

प्रतिक्रमण की सूक्ष्म कमजोरियाँ

प्रश्नकर्ता : अपने से किसी का अहंकार आहत हो गया हो न, इसलिए वह यहाँ नहीं आता है, फिर हम अहंकार करके झटक दें और कहें कि 'भई, अब मैंने प्रतिक्रमण कर लिया, अब वह नहीं आता उससे मुझे क्या लेना-देना ?'

दादाश्री : वह सब तो गलत है। लेकिन एक तरह से ये सब अपने निमित्त से हो गया न, तो हो सके उतना हमें करना चाहिए। फिर नहीं हो सके तो छोड़ देना। नहीं हो सके तो फिर उसके लिए मर नहीं सकते।

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है लेकिन यह जो खुद के अंदर समझ की बात है कि खुद की समझ में क्या होना चाहिए? कि 'अब मैंने प्रतिक्रमण कर लिया, मुझे उसके लिए कुछ नहीं है।' अब खुद गोली छोड़ दे, फिर खुद के लिए तो इतना करके मिटा देना सरल है, लेकिन जिसे लगा हो, वह तो जल रहा होगा न ?

दादाश्री : लेकिन वह यहाँ दर्शन करने नहीं आता तो (वह) कितना जल रहा होगा कि 'यह नालायक इंसान मिला, इसलिए मैं नहीं जा पाया।' तब उसका तो हमें समभाव से *निकाल* करना चाहिए न ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा, लेकिन दूसरा यह है कि, वह डिमार्केशन (सीमा) कैसे पता चले कि हमने उसका प्रतिक्रमण कर लिया और हमें उसके

लिए अभिप्राय नहीं रहे अब ? अब हन्ड्रेड परसेन्ट अपना अभिप्राय खत्म हो गया है ?

दादाश्री : फिर भी उसका नहीं जाता न !

प्रश्नकर्ता : उसका नहीं जाता और अपना भी शायद भीतर रहता हो। कभी ऐसा भी हो जाता है न कि 'अरे वे तो कितने सेन्सिटिव हैं। इतना सा कहा तो उसमें इतना ज़्यादा क्या लगा लेना ? खुद को यदि ऐसा भी हो जाए न तो अभिप्राय खत्म होने में उतनी कमी रह जाती है।

दादाश्री : हमें रहता हो तो भी उसका पता नहीं चलता।

प्रश्नकर्ता : नहीं पता चलता, वह बात सही है। बहुत सूक्ष्म है यह। क्या इसीलिए सेफ साइड के लिए उनका प्रतिक्रमण करना अच्छा है।

दादाश्री : ऐसे केस दुनिया में कम ही होते हैं। इसलिए मना लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि ज्ञान के बाद यह डिस्चार्ज अहंकार है लेकिन उससे जो गलत शब्द बोल दिए जाएँ उससे सामनेवाले को दुःख हो जाए तो ?

दादाश्री : वह तो हो सकता है, तो प्रतिक्रमण करो। यदि आपको छूटना है तो प्रतिक्रमण करो। लेकिन वह अहंकार तो अपना राग अलापता ही रहेगा, वह छोड़गा नहीं। वह तो अच्छी तरह अपना राग अलापता ही रहेगा।

दुःख देकर कोई भी मोक्ष में नहीं जा सकता

इसलिए यदि दोष नहीं होते हों तो प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत ही नहीं है। प्रतिक्रमण तो आपसे दोष हो जाए तब करना। सामनेवाला कहे कि 'साहब, दोष हों ही नहीं, इतनी अधिक मेरी शक्ति नहीं है। दोष तो हो जाते हैं।' तब तो हम कहेंगे कि, 'शक्ति नहीं है तो प्रतिक्रमण करना।'

जैसा ठीक लगे वैसा प्रतिस्पंदन डालना

संसार-सागर परमाणुओं का सागर है। जब उसमें जहाँ स्पंदन खड़े होते हैं, वहाँ लहरें उठती हैं और वे लहरें फिर दूसरों से टकराती हैं। इससे फिर दूसरे में भी स्पंदन खड़े होते हैं और फिर तूफान शुरू हो जाता है। यह सब परमाणुओं में से ही उपजता है। आत्मा उनमें तन्मयाकार हो जाए, तो स्पंदन ज़ोरों में शुरू हो जाते हैं।

इस दुनिया में भी सागर जैसा ही है। एक भी स्पंदन उठा, तो अनेकों प्रतिस्पंदन उठते हैं! सारा संसार स्पंदन से ही उत्पन्न हुआ है। सभी तरह के, सभी स्पंदन सही हैं और ताल बद्ध सुनाई देते हैं।

किसी बावड़ी में मुँह डालकर तू ज़ोर से चिल्लाए कि 'तू चोर है,' तो बावड़ी में से क्या जवाब आएगा? 'तू चोर है।' तू कहे कि 'तू राजा है,' तो बावड़ी भी कहेगी कि 'तू राजा है।' और 'तू महाराजा है,' ऐसा कहे तो बावड़ी 'तू महाराजा है' ऐसे जवाब देगी। वैसे ही यह जगत् भी बावड़ी समान है। तू जैसा कहेगा वैसे स्पंदन उठेंगे। 'एक्शन एन्ड रिएक्शन आर इक्वल एन्ड ऑपोज़िट (क्रिया और प्रतिक्रिया समान और विरुद्ध होती है)' ऐसा नियम है। इसलिए जैसे आपको पसंद हों, वैसे स्पंदन डालना। सामनेवाले को चोर कहा, तो तुझे भी ऐसा सुनना पड़ेगा कि 'तू चोर है' और अगर सामनेवाले को ऐसा कहेगा कि 'राजा है,' तो तुझे भी ऐसा सुनने को मिलेगा कि 'राजा है।' हमने तो तुझे परिणाम बता दिए, लेकिन स्पंदन पैदा करना तेरे हाथ की बात है। इसलिए जैसा तुझे ठीक लगे, वैसे स्पंदन डालना।

दुःखदाई स्पंदनों को अब पूर्ण विराम

यदि हम पत्थर नहीं डालें, तो हम में स्पंदन नहीं उठते और सामनेवाले में भी तरंगे नहीं उठतीं और हमें भी कोई असर नहीं पहुँचता। लेकिन क्या

हो? सभी लोग स्पंदन डालते ही हैं। कोई छोटा तो कोई बड़ा स्पंदन डालता है। कोई कंकड़ डालता है, तो कोई ढेला डालता है। ऊपर से फिर स्पंदन के साथ अज्ञान है, इसलिए बहुत ही फँसाव है। ज्ञान हो और फिर स्पंदन हों, तो हर्ज नहीं। भगवान ने कहा है कि स्पंदन मत डालना। लेकिन लोग बिना स्पंदन डाले रहते ही नहीं न! देह के स्पंदनों का हर्ज नहीं है, लेकिन वाणी और मन के स्पंदनों की मुश्किल है। इसलिए इन्हें तो बंद ही कर देना चाहिए, यदि सुख से रहना चाहो तो। जहाँ-जहाँ पत्थर फेंके हैं, वहाँ-वहाँ स्पंदन उठने ही वाले हैं। जब (भारी) स्पंदन बहुत इकट्ठे हो जाते हैं, तब उन्हें भुगतने नर्क में जाना पड़ता है और उन्हें भुगतने के बाद हलका होकर, वापस आता है। हलके स्पंदन इकट्ठे किए हों, तो वह देवगति भोगकर वापस आता है। सागर बाधा नहीं डालता लेकिन हमारे द्वारा डाले गए पत्थरों के स्पंदन (उठनेवाली तरंगे) ही बाधा डालते हैं। यदि सागर की ओर ध्यान नहीं दिया, तो वह शांत ही है और जहाँ-जहाँ गड़बड़ की थी, उसी के ही, सागर के वही स्पंदन बाधक होते हैं।

मन को यदि तरछोड़ लग गई, तब फिर देख लो उस तिरस्कार के स्पंदन! त्यागियों की तरछोड़ कठोर होती हैं। वीतराग तो '(उन्हें) लाख तरछोड़ मिलने के बावजूद भी खुद स्पंदन पैदा नहीं होने देते।' शरीर में स्पंदन पैदा करना ही मत, शरीर को क्या करना है? उनका तो नाश होनेवाला है, फिर चाहे वे हीरे के ढाँचे हों या मोती के। उनमें स्पंदन पैदा करके क्या मिलनेवाला है?

खुद अपने ही मन से फँसा है। ऊपर से शादी की, तो मिश्रचेतन में फँस गया। वह भी फिर पराया! यदि बाप के साथ स्पंदन खड़े होते हैं, तो वाइफ के साथ क्या नहीं होंगे? वाइफ तो मिश्रचेतन है, अतः वहाँ क्या करना? स्पंदन ही बंद कर देना चाहिए। बाप के साथ स्पंदन चालू रखेगा तो चलेगा लेकिन वाइफ के साथ स्पंदन खड़े हुए बगैर रहते ही नहीं न!

दादावाणी

जीभ का, वाणी का, गड़बड़-घोटाला क्या है? वह अहंकार है पूर्वजन्म का। उस अहंकार से जीभ चाहे जैसा कह देती है और उससे स्पंदनों का टकराव खड़ा होता है। आज जो भी दुःख हैं, वे अधिकतर जीभ के, वाणी के स्पंदनों के ही हैं।

पहुँचता है मूल शुद्धात्मा को

एक बार आम के पेड़ पर बंदर आ जाए और आम तोड़ डाले, तो परिणाम कहाँ तक बिगड़ता है? कि यह आम का पेड़ काट डाला होता तो अच्छा था। ऐसा कर देता है। अब भगवान की साक्षी में निकली हुई वाणी कहीं व्यर्थ जाती होगी? ऐसा है। परिणाम नहीं बिगड़ें तो कुछ भी नहीं है। सब शांत हो जाता है, बंद हो जाता है।

ये सब अपने ही परिणाम हैं। आप आज से किसी को स्पंदन डालने का, किंचित्मात्र किसी के लिए विचार करना बंद कर दो। विचार आए तो प्रतिक्रमण करके धो देना। तो सारा दिन किसी के स्पंदन बगैर का गया! इस तरह दिन बीते तो बहुत हो गया, वही पुरुषार्थ है।

हम तो सामनेवाले के किस आत्मा की बात करते हैं, (किसके पास) प्रतिक्रमण करते हैं, वह जानते हो? प्रतिष्ठित आत्मा के नहीं करते हैं, हम उसके मूल शुद्धात्मा के करते हैं। ऐसा उसके साथ उस शुद्धात्मा की उपस्थिति में हुआ, उसके एवज में हम प्रतिक्रमण करते हैं। यानी उस शुद्धात्मा के प्रति हम क्षमा माँगते हैं। फिर उसके प्रतिष्ठित आत्मा से हमें लेना-देना नहीं है।

समझ में सेट करो पहली कलम

प्रश्नकर्ता : 'हे दादा भगवान! मुझे, किसी भी देहधारी जीवात्मा का किंचित्मात्र भी अहम् न दुभे (टेस न पहुँचे), न दुभाया जाए या दुभाने के प्रति अनुमोदना न की जाए, ऐसी परम शक्ति दीजिए।

मुझे किसी भी देहधारी जीवात्मा का किंचित्मात्र

अहम् न दुभे ऐसी स्याद्वाद वाणी, स्याद्वाद वर्तन और स्याद्वाद मनन करने की शक्ति दीजिए। वह समझाइए।

दादाश्री : किसी का अहम् नहीं दुभे, इसलिए हम स्याद्वाद वाणी माँगते हैं। ऐसी वाणी हमें आहिस्ता-आहिस्ता उत्पन्न होगी। मैं जो वाणी बोलता हूँ न, वह मुझे यह भावना करने के फल स्वरूप ही प्राप्त हुई है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इसमें किसी के अहम् को ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए तो इसका अर्थ ऐसा तो नहीं होता है न कि किसी के अहम् का पोषण करें?

दादाश्री : नहीं, ऐसे किसी के अहम् का पोषण नहीं करना है। किसी के अहम् को ठेस नहीं पहुँचानी है, ऐसा रहना चाहिए। मैं कहूँ कि काँच के गिलास फोड़ मत देना तो उसका अर्थ ऐसा नहीं है कि आप काँच के गिलास का ध्यान रखना। वे अपनी जगह सुरक्षित ही पड़े हैं। यानी मत फोड़ना। वे फूट रहे हों तो अपने निमित्त से मत फोड़ना और आपको सिर्फ यह भावना करनी है कि 'मुझ से किसी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो, उसका अहंकार भग्न नहीं हो' ऐसा रखना चाहिए। उसे उपकारी मानते हैं। बहुत गहन बात है यह तो!

अब आप अभिप्राय से अलग हो गए

अब इसके बावजूद किसी का अहंकार आपसे दुभाया गया हो तो यहाँ हमारे पास (इस कलम अनुसार) शक्ति माँगना। यानी जो हुआ उससे खुद का अभिप्राय अलग रखते हैं, इसलिए उसकी अधिक ज़िम्मेदारी नहीं रहती। क्योंकि अब उसका 'अभिप्राय' अलग हो गया। 'अभिप्राय' जो अहंकार दुभाने का था, वह इस प्रकार माँग करने से उसका 'अभिप्राय' अलग हो गया।

प्रश्नकर्ता : 'अभिप्राय' से अलग हो गया यानी क्या?

दादावाणी

दादाश्री : 'दादा भगवान' तो समझ गए न कि इस बेचारे को अब किसी का अहम् दुभाने की इच्छा नहीं है। उसकी खुद की ऐसी इच्छा नहीं है फिर भी ऐसा हो जाता है। जबकि जगत् के लोगों को इच्छा सहित हो जाता है। अर्थात् यह कलम बोलने से क्या होता है कि हमारा अभिप्राय अलग हो गया। इसलिए हम उस ओर से मुक्त हो गए।

अर्थात् यह शक्ति ही माँगनी है। आपको कुछ करना नहीं है, सिर्फ शक्ति ही माँगनी है। इसे अमल में नहीं लाना है।

प्रश्नकर्ता : शक्ति माँगना। यह बात ठीक है, लेकिन हमें क्या करना चाहिए कि जिससे दूसरों का अहम् नहीं दुभे?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं करना है। इस कलम के अनुसार आपको सिर्फ बोलना है, बस! और कुछ करना नहीं है। अभी जो (किसी का) अहम् दुभाया जाता है वह फल (डिस्चार्ज में) आया है। अभी जो होता है वह तो पहले 'डिसाइडेड' हो चुका है, उसे रोका भी नहीं जा सकता, उसे बदलना वह तो सिर्फ माथापच्ची है। लेकिन यह कलम बोलें तो फिर जिम्मेदारी ही नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : और यह सच्चे दिल से बोलना चाहिए?

दादाश्री : वह तो सच्चे दिल से ही सब करना चाहिए। और जो इंसान करता है न, वह छोटे दिल से नहीं करता, सच्चे दिल से ही करता है। लेकिन इसमें अब खुद का अभिप्राय अलग हो गया। यह एक तरह का बहुत-बड़ा विज्ञान है।

भाव प्रतिक्रमण तत्क्षण ही

प्रश्नकर्ता : जब सामनेवाले का अहंकार दुखाया, तब ऐसा होता है कि यह मेरा अहंकार बोला न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा अर्थ निकालने की

ज़रूरत नहीं है। हमारी जागृति क्या कहती है? हमारा मोक्ष मार्ग यानी अंतर्मुखी मार्ग है! निरंतर अंदर की जागृति में ही रहना और सामनेवाले का अहम् दुभाया हो तो तुरंत उसका प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए यही आपका काम है। और आप तो इतने सारे प्रतिक्रमण करते हैं उसमें एक ज़्यादा! हम से भी यदि कभी किसी का अहम् दुभाया गया हो, तो हम भी प्रतिक्रमण करते हैं।

इसलिए हर रोज़ सुबह में ऐसा बोलना कि 'मेरे मन-वचन-काया से किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख न हो।' ऐसा पाँच बार बोलकर निकलना और फिर यदि दुःख हो तो वह हमारी इच्छा के विरुद्ध हुआ है, उसका शाम को प्रतिक्रमण कर लेना। हम जगत् से सिर्फ इतना ही कहना चाहते हैं कि मन-वचन-काया की सारी क्रियाएँ साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स हैं और 'तू' स्वतंत्र है। भाव से 'तू' अलग है इसलिए तेरे भाव बदल। मन-वचन-काया की क्रिया होगी तो भी तू कल्पांत मत करना तू भाव बदल।

अंतिम दशा, आप अपने अंदर का देखते रहो

अंदर की मशिनरी को ढीली नहीं छोड़ना है। आपको उसकी देख-रेख रखनी है कि कहाँ-कहाँ घिसाव हो रहा है, क्या हो रहा है, किसके साथ वाणी सख्त निकल गई। बोल दिया उसका हर्ज नहीं है, आपको 'देखते' रहना है कि 'ओहोहो, चंदूभाई ने सख्ती से बोल दिया।'

प्रश्नकर्ता : लेकिन जब तक हो सके तब तक बोलना ही नहीं। वही अच्छा है न?

दादाश्री : 'बोलना-नहीं बोलना' वह अब आपके बस में नहीं रहा है।

बाहर का तो आप देखोगे वह अलग बात है लेकिन जब आप अपने ही अंदर का सब देखते रहोगे तो उस वक्त आप केवलज्ञान सत्ता में होओगे।

लेकिन अंश केवलज्ञान होगा, सर्वांश नहीं। अंदर बुरे विचार आएँ उन्हें देखना है, अच्छे विचार आएँ उन्हें देखना है। बुरे पर द्वेष नहीं और अच्छे पर राग नहीं। अच्छा-बुरा देखने की आपको ज़रूरत नहीं है। क्योंकि मूल में (असल में) सत्ता आपके काबू में है ही नहीं।

जिसे संसार बढ़ाना हो उसे इस संसार में लड़ाई-झगड़ा करना चाहिए, सबकुछ करना चाहिए। जिसे मोक्ष में जाना हो उसे हम, 'क्या हो रहा है' उसे 'देखो', ऐसा कहते हैं।

अहो! अव्याबाध स्वरूप खुद का

आत्मा कैसा है? 'अव्याबाध'। जो किसी को किंचित्मात्र दुःख नहीं होने देता और किसी का आत्मा अन्य किसी को भी किंचित्मात्र दुःख नहीं दे सकता, ऐसा सभी का आत्मा है! लेकिन मान्यता में कितना ज्यादा फर्क! क्योंकि अज्ञान मान्यताएँ हैं। वे कैसे जाएँ? 'ज्ञानीपुरुष' ने ऐसा आत्मा जाना है कि जो किसी को भी किंचित्मात्र दुःख नहीं दे सके! 'अव्याबाध स्वरूप'!

अव्याबाध का अर्थ यह है कि मेरा स्वरूप ऐसा है कि कभी किसी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं दे सकता और सामनेवाले का स्वरूप भी वैसा ही है कि उसे कभी भी दुःख नहीं हो सकता; उसी प्रकार से हमें भी सामनेवाला दुःख नहीं दे सकता, ऐसा अनुभव हो जाता है। सामनेवाले को उसका अनुभव नहीं है, लेकिन मुझे तो अनुभव हो गया है, फिर 'मुझ से किसी को दुःख होगा,' ऐसी शंका नहीं रहती। जब तक 'सामनेवाले को मुझ से दुःख होता है,' ऐसी थोड़ी-सी भी शंका रहे तो उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए।

क्षेत्र बदल जाए ऐसा पुरुषार्थ कर लो

प्रश्नकर्ता : खुद वीतरागता से देखना वह कैसे, किस प्रकार होता है? सामनेवाले को राग हो

जाए (आए) तो खुद वीतराग रहे, ऐसा एडजस्टमेंट खुद ने किस प्रकार लिया होता है?

दादाश्री : उसे क्या हुआ है वह आपके समझ में आ जाता है और इसके अलावा आपको उसके शुद्धात्मा को देखना है और उसके शुद्धात्मा को प्रार्थना करके कहना कि 'इस बहन को शांति दीजिए।' फिर बाकी आपकी जिम्मेदारी नहीं है। वह आप पर राग करेगी तो आपको मोक्ष में नहीं जाने देगी ऐसा हो सकता है, लेकिन भगवान महावीर पर भी बहुत लोगों ने राग किया था, लेकिन महावीर कहीं भी नहीं रुके। यदि आपकी भूल होगी तभी आप फँसोगे। लेकिन तीर्थकरों ने यहाँ तक कहा है कि दूसरे को दुःख नहीं हो उसके लिए सिर मुंडवा लेना, ताकि सामनेवाले को राग उत्पन्न ही नहीं हो कहते हैं। लेकिन इस काल की विचित्रता है और अभी एक-दो जन्म होने बाकी हैं, इसलिए हम आपसे ऐसा-वैसा कोई भी उपाय करने को नहीं कहते, अंतिम जन्म में जो होगा सो देख लेंगे। अभी तो इस जन्म में आप ऐसा कोई हल ले आओ ताकि क्षेत्र बदल जाए। यहाँ के लोगों से कोई अपेक्षा न रहे। ऐसा कुछ करना।

भाव परिवर्तन से क्षेत्र परिवर्तन

प्रश्नकर्ता : दादाजी आपने यह जो कहा है न कि क्षेत्र बदले कि खुद ऐसा बन जाना चाहिए कि क्षेत्र बदल जाए।

दादाश्री : नहीं, अपना भाव वैसा रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह?

दादाश्री : जैसे-जैसे आप सभी का निकाल करते जाओगे, जैसे-जैसे (उस) क्षेत्र के लायक होते जाओगे।

यानी जितना हो सके उतना यह वाक्य, हमें ध्यान में रखना है। यानी किसी भी तरह सामनेवाले के मन का समाधान करना चाहिए।

अर्थात् इस तरह (ऐसे) सोचना है। यह कहीं एक दिन में हो जाए ऐसा नहीं है। जिंदगीभर के लिए आपको यह काम सौंप रहे हैं। आज से करने लगोगे तो कभी अंत आएगा! करने लगोगे तो, सोचोगे तो ज्यादा समझ में आएगा, लेकिन ऐसा ध्यान में रहना चाहिए, लक्ष्य में रहना चाहिए। शुद्धात्मा तो बन गए उसमें दो राय नहीं है, लेकिन प्रतीति से बने हैं, लक्ष्य से बने हैं। यानी जागृति में रहे लेकिन जितना अनुभव में आएगा...

प्रश्नकर्ता : अनुभव में आए वह काम का।

दादाश्री : अनुभव में कमी है वह कौन करवाता है? यदि किसी को आपके बाहर के व्यवहार से असंतोष है, वह अपनी कमी है। जितना हो सके उतना उसे डिग्रियाँ समझाकर, काम निकालकर, किसी भी तरह वह आपको छोड़ दे ऐसा करना। यदि रास्ते में आपको चोर मिल जाए तो चोर आपको जाने दे, ऐसा कुछ करना।

प्रश्नकर्ता : किसी भी तरह से हल लाना है। किसी भी तरह से वे हमें जाने दें।

दादाश्री : वे कहेंगे, 'जाओ, चले जाओ।' तो आप समझना कि छूट गए। झगड़े करेंगे तो अंत ही नहीं आएगा। चोरों ने छोड़ दिया तो आपको छुटकारा मिल गया। आपको कैसे भी करके समझाकर हल लाना चाहिए। ऐसा भाव रखना चाहिए, तो फिर हल आ जाएगा। आपको ऐसा विचार आता है कि किसी जीव को दुःख होगा? वह मोक्ष में जाने से रोकेगा? यही मैं कहना चाहता हूँ।

प्रश्नकर्ता : एक बार दादाजी ने कहा था कि आपके निमित्त से यदि किसी को दुःख हुआ होगा तो उसका तो मोक्ष नहीं होगा और वह आपको भी जाने से रोकेगा।

दादाश्री : उसका पूरा क्लेम रहेगा। क्लेम रहेगा उस वजह से मैं यही कहना चाहता हूँ। आपके

अनुभव में जो बात आ गई है न, वही मैं कहना चाहता हूँ, उसे आप पर राग हो रहा है उससे नहीं। क्योंकि आपको उसके लिए राग भी नहीं है और द्वेष भी नहीं है, फिर आपकी रिस्पॉन्सिबिलिटी (जिम्मेदारी) नहीं है।

किसी को दुःख न हो, वह 'भाव' दृढ़ रखो

अंदर अनंत शक्ति है। वे शक्तिवाले क्या कहते हैं कि, 'हे चंदूभाई! आपका क्या विचार है?' तब अंदर बुद्धि कहती है कि 'व्यापार में इतना नुकसान हो गया है! तो अब क्या करें? अब नौकरी करके नुकसान चुकता कर लो न!' अंदर अनंत शक्तिवाले क्या कहते हैं कि 'हम से पूछो न, बुद्धि की सलाह क्यों लेते हो? हमारे पास अनंत शक्ति है!' जो शक्ति नुकसान करवाती है उसी शक्ति से फायदा ढूँढो न! नुकसान करवाती है कोई और शक्ति और फायदा ढूँढते हो किसी और के पास तो उसका भागाकार कैसे होगा? आपका 'भाव' यदि नहीं बदलेगा तो इस जगत् में ऐसी कोई भी शक्ति नहीं है जो अपनी इच्छानुसार न बदले। ऐसी अनंत शक्तियाँ अपने अंदर हैं। लेकिन किसी को भी दुःख नहीं हो जाए, किसी की भी हिंसा नहीं हो जाए, ऐसे आपके लॉ (नियम) होने चाहिए। आपके 'भाव' का लॉ इतना मजबूत होना चाहिए कि देह छूट जाए लेकिन आपका भाव नहीं टूटना चाहिए। यदि देह छूटेगा तो एक बार छूटेगा, इसलिए इसमें कोई डरने की ज़रूरत नहीं है। ऐसे डरेंगे तो फिर लोगों के तो बुरे हाल हो जाएँगे न! कोई सौदा ही नहीं करेगा न!

ज्ञानी के व्यू पोइन्ट से समझ लो सही बात

भगवान इतना ही कहते हैं कि व्यवहार में किसी के लिए बाधारूप न बन जाएँ, उतना व्यवहार संभाल लेना। यदि कोई कहे कि 'ठहरो' और आप शून्यवत् रहो तो क्या होगा?

ये सब बातें समझ लेनी हैं। ये इलेक्ट्रिक के

सारे पोइन्ट्स सेट किए हुए होते हैं, और आप हर एक पोइन्ट को समझ लो तो फिर परेशानी नहीं होगी। वर्ना पंखे के बजाय लाइट जलने लगेगी और लाइट के बदले पंखा चलने लगेगा, ऐसा होता रहेगा।

‘ज्ञानीपुरुष’ जो समझ देते हैं, उस समझ से छुटकारा मिलता है, बिना समझ के क्या होगा? वीतराग धर्म ही सर्व दुःखों से मुक्ति दिलवाता है। ऐसे व्यवहार की बातें किसी ने बताई ही नहीं है। ऐसी बात समझ आए बिना व्यवहार कभी सुधर ही नहीं सकता। यदि व्यवहार सुधर जाएगा तो आप मुक्त हो सकोगे वर्ना मुक्त कैसे हो सकोगे?

तीर्थकरों की वाणी के कोड... किसी का प्रमाण नहीं दुभे

भगवान का स्वर कैसा था, वीतरागों का? जैसे मधुर बाजा बज रहा हो वैसा! शहद से भी उत्तम माना जाता है! किसी भी अन्य मिठास से, सब से उत्तम शब्द भगवान का कहा हुआ होता है!

प्रश्नकर्ता : तीर्थकरों की वाणी के कोड कैसे होते हैं?

दादाश्री : उन्होंने ऐसा कोड तय किया होता है कि ‘मेरी वाणी से किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं हो।’ दुःख तो होगा ही नहीं बल्कि किसी भी जीव का किंचित्मात्र प्रमाण भी नहीं दुभे, पेड़ का प्रमाण भी नहीं दुभे। ऐसे कोड सिर्फ तीर्थकरों के ही होते हैं।

इतना संक्षेप में समझ जाओ

तीर्थकर की सोलह कारण भावनाएँ होती हैं, उन भावनाओं का सारांश अपने वर्तन में होना चाहिए क्योंकि भावनाओं की ज़रूरत नहीं है लेकिन उनका सारांश आ जाना चाहिए। किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं हो ऐसी वृत्ति होनी चाहिए। अन्य कोई दुःख दे तो अपनी भूल कबूल कर ले, उसी में सोलह भावनाएँ समा जाती हैं। इतने में, संक्षेप में समझ जाओ।

तीन साल के लिए कषायों को खुराक देना बंद करो

किसी इंसान को भूल रहित होना हो तो उसे हम कहते हैं कि सिर्फ तीन ही साल क्रोध-मान-माया-लोभ को खुराक मत देना, तो सभी बेजान हो जाएँगे। भूलों को यदि तीन ही वर्ष खुराक नहीं मिले तो वे घर बदल देती हैं। दोष, वही क्रोध-मान-माया-लोभ का पक्ष। यदि तीन वर्ष के लिए पक्ष कभी भी नहीं लिया तो वे दोष भाग जाएँगे।

बंद करो कषाय का रक्षण

लोग तो क्या करते हैं? बेटे को बहुत झिड़काते हैं। बेटा उम्र में थोड़ा बड़ा हो, उस पर भी बहुत गुस्सा हो जाते हैं। और फिर मन में होता है कि ‘अरे, ज़रा ज़्यादा बोल दिया है।’ ऐसा फिर अपने थर्मामीटर से समझ जाते हैं। लेकिन फिर, यदि कोई पड़ोसी आकर कहे, ‘चंदूभाई, कहीं इतना गुस्सा करते होंगे?’ तब चंदूभाई क्या कहते हैं? ‘आप उसे जानते नहीं हो?’ ऐसे, पोषण दे दिया। खुद समझ रहे थे कि ‘ज़्यादा बोल दिया है’, तो वहाँ उसे कहने में क्या हर्ज है? कि ‘भाई, ज़्यादा बोल दिया। भूल हो गई।’ इतना कहें तो फिर क्रोध को खुराक नहीं मिलती, भूखा रहता है। लेकिन आप तो खिलाते हो, ‘आराम से खा। मेरी आबरू नहीं जाए तो अच्छा! तू खा’, कहते हैं। तभी क्रोध को पोषण देता है न! (एक तरफ) पोषण भी देना है और (दूसरी तरफ) निकालना भी है। आपकी समझ में आता है, लोग पोषण देते हैं?

प्रश्नकर्ता : दादा, ये तो बहुत सूक्ष्म बातें हो रही है।

दादाश्री : नहीं ऐसी बातें अन्य कहीं हो ही नहीं सकती। ये बातें पुस्तक में नहीं हैं और कहीं नहीं हैं। ये सब तो मुझे अपने ज्ञान में दिखाई देता है।

आपकी समझ में आती हैं ये सारी सूक्ष्म

बातें? ज्ञानीपुरुष ही समझ सकते हैं कि यह किसकी वकालत की। उन्होंने (चंदूभाई ने) किसकी वकालत की? क्रोध का बचाव किया। उस वक्त उन्हें क्या कहना चाहिए? यदि क्रोध को भूखा मारना हो, तो कहना 'भाई, गलत हो गया। मुझे बहुत पछतावा हो रहा है।' ऐसा कहा हो, तो क्रोध समझ जाता है कि 'हमारी वकालत नहीं कर रहे हैं। इसलिए अब तो यह घर खाली करना पड़ेगा। कहीं पर भी रेन्ट (किराये) का नियम होता है या नहीं, लेकिन यहाँ से तो अब खाली करना ही पड़ेगा ऐसा मुझे यकीन हो गया है', कहेगा। अब आप उसका बचाव मत करो। बल्कि जिस व्यक्ति को आपसे दुःख हुआ है, उसके नाम का प्रतिक्रमण करना है क्योंकि क्रोध-मान-माया-लोभ खत्म हो गए।

लोग तो क्रोध-मान-माया-लोभ को ही संजोया करते हैं। कोई गाली दे तो भी उल्टा उपराणां (रक्षण करना, तरफदारी करना) लेते हैं। हमें कोई गाली दे, उस वक्त जो खुद गुस्सा होता है, उस गुस्से का खुद उपराणां लेते हैं। यदि उस गुस्से से कहें कि, 'सहन कर, किसलिए तू गुस्सा हो रहा है?' मतलब उपराणां नहीं ले, तो अभी राह पर आ जाए। लोग उपराणां लेते हैं? बल्कि खुद के गुस्से का उपराणां लेते हैं, नहीं लेते? गुस्से को संजोते रहते हैं। ऐसे आपने कभी गुस्से को संजोया था? यही धंधा किया है आज तक! क्रोध-मान-माया-लोभ को खाना खिलाया था और (ऊपर से) कहते हैं, 'मुझे इनको निकाल देना है।'

इस क्रोध को उग्रता कहते हैं। यानी, ये प्रकृति के परमाणु ही हैं। उसके अंदर, इस जगत् के लोगों का, अज्ञानी का आत्मा तन्मयाकार हो जाता है, तब उसे क्रोध कहते हैं। आप अब ज्ञाता-दृष्टा के तौर पर रहो। उग्रता हो और आपकी उग्रता से सामनेवाले को दुःख हो जाए तो, आप उसका प्रतिक्रमण करो। सामनेवाले को दुःख तो होना ही नहीं चाहिए न! अपनी ही पहले की भूल है न! उस उग्रता की

जिम्मेदारी तो अपनी ही है न! उस उग्रता की जोखिमदारी तो अपनी ही है न!

रक्षण करने से ही खड़ा है ये जगत्

व्यवहार किसे कहते हैं? 'कषाय रहित' बोलो। जिसमें कषाय यानी क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं हो, उसे अकषाय वाणी कहते हैं।

वाणी के कारण ही यह जगत् खड़ा रहा है। यदि वाणी नहीं होती तो यह जगत् ऐसा नहीं होता। अर्थात् वाणी ही मुख्य आधार है।

वाणी बोलने में हर्ज नहीं है। लेकिन, 'हम सही हैं' इस प्रकार से उसका रक्षण नहीं होना चाहिए। 'हम सही हैं' उसी को रक्षण कहते हैं और रक्षण नहीं है तो कुछ भी नहीं है। अहंकार ऐसा है कि खुद भूल कबूल नहीं करता। कबूल नहीं करे उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन ऊपर से उसका प्रोटेक्शन करता है।

समझ में आ जाए तो काम निकल जाए

तैयार हो जाओ (प्रोटेक्शन नहीं करे) तो काम निकल जाए ऐसा है, नहीं तो फिर कच्चे रह जाओगे। प्रोटेक्शन करोगे तो फिर कच्चे रह जाओगे। कोई परिपक्व करके नहीं देगा। क्योंकि, ऐसा टूटा हुआ कौन रिपेयर करके देगा? ज्ञानी से कच्चा रह जाए, तो उसे कौन रिपेयर करके देगा? इसलिए अभी भी (तू) प्रोटेक्शन तो करेगा, लेकिन प्रोटेक्शन करे तो उसके भी प्रतिक्रमण करना और भूल हुई उसके भी प्रतिक्रमण करना। तू वापस प्रोटेक्शन करेगा, वह भी मैं जानता हूँ। भीतर इतनी बड़ी-बड़ी गाँठें पड़ी हैं। उन्हीं के आधार पर तो जी रहे हों सब। उन गाँठों की वजह से ही तो लोगों के प्रति लागणी (लगाव) नहीं रहता। सभी लोगों के प्रति लागणी होनी चाहिए? क्यों नहीं होनी चाहिए? सभी आत्मा हैं, तो क्या लागणी नहीं होनी चाहिए? इसीलिए तो हम कहते हैं न, मतलब निस्पृहता नहीं,

सस्पृह-निस्पृह। आत्मा के बारे में सस्पृह हैं। पुद्गल के बारे में निस्पृह हैं। इसलिए लागणी तो रहती है न! सस्पृह यानी सभी जगह पर लागणी होती है, जीवमात्र के साथ। और तू कहता है कि 'मुझे दादा के अलावा और किसी जगह पर लागणी नहीं है।' तो सबकुछ कहाँ घुस गया? तो 'इन गाँठों में।' इतनी बड़ी-बड़ी गाँठें पड़ी हुई होती हैं। कौन तोड़ेगा इन्हें?

सत्संग से टूटती हैं भूलें

यदि आपकी भूल नहीं टूटे तो ऐसा किया हुआ सत्संग काम का है ही नहीं। सत्संग का अर्थ ही है भूल को तोड़ना। अपने निमित्त से किसी को दुःख नहीं होना चाहिए। यदि किसी को दुःख हो जाए तो अपनी भूल है और भूल खत्म करो। और यदि भूल का पता नहीं चल रहा है तो अपने कर्म का उदय है, इसलिए माफी माँगते रहना है। यदि सामनेवाला समझदार हो तो प्रत्यक्ष माफी माँग लेनी चाहिए और यदि वह टेढ़ा चल रहा हो तो अंदर ही अंदर माफी माँगते रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : उस प्रतिक्रमण का असर नहीं हो तो उसका कारण यह है कि हमने पूरे भाव से नहीं किया या सामनेवाले व्यक्ति के आवरण हैं?

दादाश्री : सामनेवाले व्यक्ति का हमें नहीं देखना है। वह तो पागल भी हो सकता है। अपने निमित्त से उसे दुःख नहीं होना चाहिए, बस!

प्रश्नकर्ता : किसी भी वजह से उसे दुःख हो जाए तो हमें उसका समाधान करने का प्रयत्न करना चाहिए।

दादाश्री : यदि उसे दुःख हो जाए तो समाधान तो अवश्य करना चाहिए। वह अपनी 'रिस्पॉन्सिबिलिटी' (ज़िम्मेदारी) है। हाँ, किसी को भी दुःख नहीं हो उसी के लिए तो अपनी लाइफ (ज़िंदगी) है।

समेटकर चलोगे तो मोक्ष में जा सकोगे

(इस जगत् से छूटना हो तो) आप 'प्रतिक्रमण' तो बहुत करना। जितने आपके आसपास के लोग हैं, जिन-जिनको दुःख दिए हैं, रोज़ एक-एक घंटा उनके 'प्रतिक्रमण' करना। हम जिसके प्रतिक्रमण करते हैं न, उसे हमारे लिए कुछ बुरा भाव तो नहीं होता लेकिन मान उत्पन्न होता है और प्रतिक्रमण हो जाएँ तो चाहे जितना बैर हो, तब भी छूट जाएगा, इसी जन्म में! यही एक उपाय है। यह भगवान महावीर का पूरा सिद्धांत, प्रतिक्रमण पर ही खड़ा है।

किसी को अपने से किंचित्मात्र दुःख हो जाए तो समझना कि अपनी भूल है। अपने भीतर परिणाम ऊँचे-नीचे होते हैं तो भूल अपनी है ऐसा समझ में आता है। सामनेवाला व्यक्ति भुगत रहा है इसलिए उसकी भूल तो प्रत्यक्ष है ही लेकिन निमित्त हम बनें, हमने उसे डाँटा इसलिए अपनी भी भूल है।

अपनी भूल से सामनेवाले पर कोई भी असर होता हो, यदि कुछ उधार हो जाए तो तुरंत ही मन से माफी माँग कर जमा कर लेना चाहिए। अपनी भूल हो जाए तो उधार चढ़ जाता है लेकिन तुरंत ही केश-रोकड़ा प्रतिक्रमण कर लेना है।

हमने कितना धोया, तब जाकर बहीखाता छूट पाया। हम कितने ही काल से धोते आए हैं, तब हिसाब छूटा। आपको तो मैंने रास्ता दिखाया है, इसलिए जल्दी छूट जाएगा। हम तो कितने ही काल से खुद धोते आए हैं। हमें तो प्रतिक्रमण कर लेना है, ताकि हम जोखिम में से छूट जाएँ। मुझे शुरू-शुरू में सभी लोग 'अटैक' करते थे न? लेकिन बाद में सब थक गए। उसके सामने यदि अपना आक्रमण हो तो सामनेवाले नहीं थकते। यह जगत् किसी को भी मोक्ष जाने दे ऐसा नहीं है, ऐसा बुद्धिवाला जगत् है यह पूरा। इसमें से सावधानी पूर्वक निकल जाए, समेटकर निकल जाए, तो मोक्ष में जा सकेगा।

- जय सच्चिदानंद

अडालज त्रिमंदिर में आयोजित हुआ सातवाँ हिन्दी शिविर

अडालज त्रिमंदिर संकुल में सातवाँ हिन्दी शिविर २८ मई से १ जून २०१५ के दौरान आत्मज्ञानी पूज्यश्री दीपकभाई के पावन सांनिध्य में आयोजित हुआ। भारत के विभिन्न राज्यों से लगभग १७०० महात्मा-मुमुक्षुओं ने इस शिविर में भाग लिया। शिविर के दौरान प्रश्नोत्तरी सत्संग, ज्ञानविधि, विवाहित भाईयों-बहनों के साथ अलग-अलग समूह में पूज्यश्री का विशेष रूप से सत्संग-सामायिक, भक्ति, गरबा, प्रक्षाल-पूजन-आरती, दर्शन, आप्तपुत्र-आप्तपुत्रीओं के साथ ग्रुप सत्संग तथा सहायता केन्द्र और तीर्थयात्रा जैसे वैविध्यपूर्ण कार्यक्रम रखे गए।

शिविर के दौरान प्रथम सेशन में प्रतिक्रमण (संक्षिप्त) हिन्दी किताब का वाचन किया गया। साथ-साथ पूज्यश्री ने विशेष रूप से इस विषय पर दादाश्री के विज्ञान की गहरी समझ दी। महात्माओं के द्वारा पूछे गए कई प्रश्नों के समाधान पूज्यश्री द्वारा पाकर महात्माओं ने अपनी आत्मजागृति को बढ़ाया। शिविर के दूसरे सेशन में 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' इस विषय पर विशेष सत्संग का आयोजन किया गया। महात्माओं ने काफी उत्सुकता के साथ अपने दैनिक जीवन में पति-पत्नी के बीच होनेवाली गलतफहमी संबंधी तथा इन परेशानीओं में से कैसे छुटा जाएँ तथा इसका हल कैसे निकाला जाए, इसके समाधान पूज्यश्री से पाएँ।

जिन महात्माओं ने आत्मज्ञान लिए एक साल पूरा किया हो, ऐसे विवाहित भाईयों तथा बहनों के साथ अलग-अलग समूह में पूज्यश्री का विशेष रूप से सत्संग रखा गया, जिस सत्संग में महात्माओं को ब्रह्मचर्य और प्राकृतिक दोषों के बारे में विशेष ज्ञान की जानकारी दी गई। इस विशेष सत्संग के दौरान महात्माओं को कुछ अलग ही अनुभव हुआ तथा पूज्यश्री ने महात्माओं को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि ऐसे विशेष सत्संग की शुरुआत अपने सेन्टर में भी करें। जिन महात्माओं को ज्ञान लिए एक साल पूरा नहीं हुआ तथा जो पहली बार इस शिविर में आए थे ऐसे भाईयों-बहनों के साथ आप्तपुत्र भाईयों ने सत्संग किया।

ज्ञानविधि के दिन ३० मई को सुबह जनरल प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें महात्माओं ने अपने ज्ञान के अनुभव बताते हुए कहा कि ज्ञान लेने के पश्चात् उनके दैनिक जीवन में क्या परिवर्तन आएँ तथा दादाजी के ज्ञान को वह अपने जीवन में कैसे उपयोग में लाते हैं। उसी दिन शाम को आयोजित ज्ञानविधि में ७५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान पाया। ज्ञान लेने आए मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान पाकर धन्यता का अनुभव किया। ज्ञानविधि के बाद रात को गरबा का विशेष कार्यक्रम रखा गया था। पूज्यश्री ने गरबा में पधारकर महात्माओं के आनंद में और भी बढ़ोतरी की। महात्माओं ने अलग-अलग समूह में त्रिमंदिर में श्री सीमंधर स्वामी भगवान के प्रक्षाल-पूजन-आरती किए। शिविर में आए महात्माओं के बच्चों के लिए भी विशेष रूप से दो दिन के संस्कार सिंचन शिविर का आयोजन दि. २९-३० मई को किया गया। उसमें दादाजी का ज्ञान बच्चों को समझ में आए इस तरह विभिन्न प्रकार से सिखाया गया। ७ से १६ साल की उम्र वाले २५० बच्चों-युवकों ने उसमें भाग लिया।

दिनांक ३१ मई को सुबह में पूज्य दीपकभाई के दर्शन का विशेष कार्यक्रम भी रखा गया। पूज्य दीपकभाई के प्रत्यक्ष दर्शन पाकर सभी महात्मा अति आनंदित हो उठें। शाम के सत्संग में 'पाँच आज्ञा का महत्व' इस विषय पर विशेष सत्संग का आयोजन किया गया था, जिसमें पाँच आज्ञा पर विशेष रूप से प्रश्न पूछे गए तथा उसके समाधान पूज्यश्री द्वारा दिए गए।

इस अवसर पर वोट्सएप जैसी एक ऐप, जो दादा भगवान फाउन्डेशन द्वारा निर्मित है, जिसका नाम AKonnect है, जो Android फोन के जरिए महात्माओं को सत्संग की जानकारी और अन्य ज्ञानसामग्री उपलब्ध कराएगी। इस ऐप का तथा बच्चों के लिए हिन्दी भक्तिपद की ओडियो सीडी GNC-8, अक्रमपीडिया (हिन्दी) तथा आत्मसाक्षात्कार (बंगाली) पुस्तक का भी विमोचन पूज्यश्री ने किया।

दि. १ जून को शिविरार्थी महात्माओं के लिए पूज्य दीपकभाई की निश्रा में एक दिन की डाकोर तथा गोधरा त्रिमंदिर की यात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें ८५० शिविरार्थी महात्माओं ने भाग लिया। सभी महात्माओं ने डाकोर में भगवान रणछोडराय जी के दर्शन किए। पूज्यश्री ने पुनित आश्रम में यात्रा में आए महात्माओं के साथ सत्संग किया। अलग-अलग महात्माओं ने कई सवाल पूछे और अपने ज्ञान और शिविर-यात्रा के अनुभव कहकर आनंद प्रकट किया। गोधरा त्रिमंदिर में दर्शन के बाद सत्संग हाल में पूज्यश्री की हाजिरी में महात्माओं ने आनंदविभोर होकर गरबा किया। पूज्यश्री ने यात्रा के महत्व के बारे में बताया और अंत में विधि करवाई।

अडालज त्रिमंदिर संकुल में पधारे महात्मा-मुमुक्षुओं को विशेष रूप से शांति और आनंद की अनुभूति हुई। आवास, भोजन और अन्य सभी तरह की अच्छी सुविधा पाकर तथा यहाँ का वात्सल्य और शुद्ध प्रेम वाला व्यवहार देखकर शिविरार्थियों ने दिल से धन्यवाद व्यक्त किया। सभी महात्माओं ने इस पवित्र भूमि पर हुए अलौकिक अनुभव कर के दादाजी का आत्मविज्ञान सारा जग पाए, ऐसी प्रबल जगकल्याण की भावना प्रकट की।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

१५-२१ अप्रैल: १५ तारीख को कुछ स्थानिक महात्माओं ने पूज्य श्री के साथ लंदन शहर के प्रसिद्ध स्थलों की साइट सीइंग वहाँ की प्रख्यात (मशहूर) ऑपन रेड (लाल) बस में बैठकर दो घंटों की लगातार यात्रा के दौरान किया। भोजन विश्राम बाद विश्व प्रसिद्ध सेन्ट पॉल केथेड्रल चर्च देखने गए थे। वहाँ पूज्य श्री एवं महात्माओं ने विश्व के तमाम लोगों के लिए जगत् कल्याण की भावना-प्रार्थना की थी। १६ तारीख को पूज्य श्री के साथ ३०० महात्मा रॉयल एर फॉर्स (RAF) गए। म्यूझियम में विविध प्रकार के एरक्राफ्ट, प्रथम विमान से लेकर पहले-दूसरे विश्व युद्ध में उपयोग किए गए विमान देखे थे।

१७ तारीख को शुरू हुए सत्संग कार्यक्रम में प्रथम दिन अंग्रेजी में विशेष सत्संग आयोजित किया गया। इस साल सत्संग में यंग कपल और युवा बच्चों के अधिक संख्या में आने के कारण उन्हें यह सत्संग बहुत अच्छा लगा और उसकी बहुत सराहना की थी। ज्ञानविधि में २५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। जिसमें नए यंग प्रोफेशनल भी काफी थे। शनीवार की सुबह पूज्य श्री ने श्री सीमंधर स्वामी भगवान की १२० प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की। महात्माओं ने इस दिव्य वातावरण में विधि-प्रक्षाल-पूजन-आरती और अंत में गरबा करके अति आनंद की अनुभूति की। २१ वीं तारीख को राइस्लीप में स्थित यू.के. सेन्टर में 'दादा दरबार' के दो सेशन आयोजित हुए, जिसमें २०० महात्माओं ने पूज्य श्री से व्यक्तिगत तौर पर अपनी नीजि बाबतों के ज्ञानमय समाधान प्राप्त किए और दर्शन का लाभ लिया। २२ तारीख को पूज्य श्री ने लंदन से सीमंधर सिटी (अडालज) आने के लिए प्रस्थान किया।

२३ अप्रैल : पूज्य श्री का प्रातःकाल सीमंधर सिटी में आगमन हुआ।

२-५ मई : अडालज त्रिमंदिर में पहली बार विवाहित महात्माओं के लिए चार दिनों की PMHT (पेरन्ट्स महात्मा) शिविर विशेष रूप से आयोजित हुई। इस शिविर में प्रथम दो दिन 'माँ-बाप -बच्चों का व्यवहार' पुस्तक पर वाँचन-सत्संग और 'माँ-बाप-बच्चों का व्यवहार में खड़ी होनेवाली अपेक्षाएँ' विषय पर पूज्य श्री द्वारा विशेष सत्संग किए गए। उसके बाद दो दिन 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' पुस्तक पर वाँचन और 'पति-पत्नी कम्पेनियन के तौर पर' विषय पर पूज्य श्री द्वारा विशेष सत्संग किए गए। अन्य सेशन दौरान PMHT सत्संगों की स्पेशल डीवीडी, आपतपुत्रों के अनुभव, क्वीज़, भक्ति, नाटक जैसे विशेष कार्यक्रम किए गए। रोज़ रात में आप्तपुत्र-आप्तपुत्रियों द्वारा उम्र के अनुसार अलग-अलग ग्रुप में सत्संग का आयोजन हुआ।

९ मई: पूज्य श्री दीपकभाई का ६३ वाँ जन्मदिन महात्माओं ने आनंद-उल्लासपूर्वक मनाया। अडालज त्रिमंदिर में सुबह ८ से ९ सामुहिक चरणविधि, प्रार्थना और आरती हुई। पूज्य श्री ने मंदिर में पधारकर सभी भगवंतों के दर्शन-पूजन किए तथा उपस्थित सभी महात्माओं से आशीर्वाद लिए। समग्र मंदिर महात्माओं की हाज़िरी से भर गया। और बाकी बचे हुए महात्माओं ने बाहर पॉण्डियम में खड़े रहकर कार्यक्रम देखा। शाम को सत्संग हॉल में पूज्य श्री की दीर्घायु, अखंड तंदुरस्ती तथा जगत् कल्याण के लिए १ घंटे के लिए स्वरूप कीर्तन भक्ति की गई।

रात को अंबा टउनशीप ब्लिस गार्डन में लगभग ६ हज़ार महात्माओं ने दो घंटों का विशेष कार्यक्रम का आनंद उठाया। जिसमें ए.टी.पी.एल. की लेबर कॉलोनी में रहनेवाले बच्चों ने पूज्य श्री को बर्थ डे कार्ड दिया और सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। 'दख्लंदाजी' पर ब्रह्मचारी युवाओं ने हास्य नाटिका प्रस्तुत की और अंत में पूज्य श्री ने उसी विषय पर सत्संग किया था।

१३-१४ मई: कच्छ जिले के अंजार शहर में निर्माण होनेवाले त्रिमंदिर का खात मुहूर्त पूज्य श्री के हस्त हुआ। स्थानिक महात्माओं के अलावा अन्य शहरों-गाँवों से लगभग १२०० महात्मा इस अवसर पर खास तौर पर पधारे थे। पूजन-विधि करने के बाद पूज्य श्री ने फावड़े से खुदाई करके नीव की प्रथम इंट रखकर निर्माण के कार्य का शगुन किया। इसके बाद त्रिमंदिर का निर्माण निर्विघ्न हो जाएँ और कच्छ के तमाम लोग आत्मज्ञान प्राप्त करे इस हेतु प्रार्थना करवाई और स्वामी और दादा की आरती हुई। फिर पूज्य श्री ने महात्माओं संग सत्संग किया। और महात्माओं ने खुद के अनुभव कहे और खुद की भावनाएँ व्यक्त की। दूसरे दिन कच्छ जिले के लगभग २०० सेवार्थियों के लिए पूज्य श्री का सत्संग, दादा-दरबार एवं दर्शन का कार्यक्रम आयोजित हुआ।

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

नागपुर	दि : 28 जून	संपर्क : 9860243453	वैशाली	दि : 3-4 अगस्त	संपर्क : 9708234981
बिलासपुर	दि : 30 जून	संपर्क : 9425530470	बख्तियारपुर	दि : 5 अगस्त	संपर्क : 9470083078
टाटानगर	दि : 7 जुलाई	संपर्क : 9709220292	अकोला	दि : 5 अगस्त	संपर्क : 9422403002
मुझफ्फरपुर	दि : 2 अगस्त	संपर्क : 9608030142	नवादा	दि : 6 अगस्त	संपर्क : 7654057901
अमरावती	दि : 2 अगस्त	संपर्क : 9403411471	गया	दि : 7 अगस्त	संपर्क : 9835623307

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- + 'आस्था' पर सोम से शनि रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन'-गिरनार पर हर रोज सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
 - + 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
 - + 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)
- USA**
- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर..

- भारत**
- + 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर हर रोज रात ९-३० से १० (हिन्दी में) (नया कार्यक्रम)
 - + 'साधना' पर हर रोज शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
 - + 'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
 - + 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
 - + 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
- USA**
- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST
- UK**
- + 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में)
- Singapore**
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)
- Australia**
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)
- New Zealand**
- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
- USA-UK-Africa-Aus.** + 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

मुख्य सेन्ट्रों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, बडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भुज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, अमरेली त्रिमंदिर: 9924344460, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बैंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

दुर्ग	दिनांक : 27 जून	समय : सुबह 10 से 12	संपर्क : 9300012330
स्थल : SM -75, पद्मनाभपुर, दुर्ग			
भिलाई	दिनांक : 27 जून	समय : शाम 5 से 7	संपर्क : 9827481336
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास, भिलाई.			
नांदेड	दिनांक : 27 जून	समय : शाम 6 से 8	संपर्क : 8806665557
स्थल : कुसुम सभागृह, VIP रोड, नांदेड.			
रायपुर	दिनांक : 28 जून	समय : सुबह 9 से 11-30	संपर्क : 9329644433
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, तेली भवन के पास, अगासे ITI के सामने, अश्वनी नगर.			
रायपुर	दिनांक : 28 जून	समय : शाम 5 से 8	संपर्क : 9329644433
स्थल : जे.एन.पांडे, (सरकारी स्कूल) OCM चौक के पास.			
कोलकाता	दिनांक : 2-3 जुलाई	समय : शाम 6-30 से 8-30	संपर्क : 9830093230
स्थल : 19/2A श्यामानंदा रोड, बेलताला गर्ल्स स्कूल के पास.			
कटक	दिनांक : 4 जुलाई	समय : शाम 5-30 से 8	संपर्क : 7809266474
स्थल : गांधी भवन, उत्कल गांधी स्मारक निधि, (सनसाइन फिल्ड के पास), बखाराबाद.			
भुवनेश्वर	दिनांक : 5 जुलाई	समय : शाम 5-30 से 8	संपर्क : 9668159987
स्थल : रोटरी क्लब, लीक रोड नं-8, सचिवालय मार्ग, युनिट -9.			
इन्दौर	दिनांक : 12 जुलाई	समय : शाम 4 से 7-30	संपर्क : 9039936173
स्थल : कच्छी जैन धर्मशाला, स्नेहलता गंज, भंडारी ब्रीज के पास.			

गुजरात के अलावा विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

सेन्टर	समय	कार्यक्रम का पता	
दिल्ली	(२६ जुलाई) सुबह 10 बजे से 4	लॉरैल हार्डस्कूल, शिवा मार्केट के सामने.	9810098564
गाज़ियाबाद	(३१ जुलाई) सुबह 10 से 2	हाउस नं. 227, सेक्टर-17, ब्लोक-'ई', कोनार्क एवन्यु, वसुंधरा.	9968738972
जयपुर	(३१ जुलाई) दोपहर 3 से 6	विनोबा ज्ञान मंदिर, युनीवर्सिटी मार्ग, बापुनगर	9785891606
कोलकाता	(२ अगस्त) सुबह 10 से शाम 6-30	लक्ष्मीनारायण मंदिर, शरत बोस रोड.	9830093230
इन्दौर	(३१ जुलाई) शाम 4 से 8	कच्छी जैन भुवन, 17/3, स्नेहलता गंज, गली नं-3 अग्नी बान प्रेस के पीछे, भंडारी ब्रीज.	9039936173
अंजड़	(३० जुलाई) दोपहर 3 से 8	अन्नपूर्णा नगर, अंजाड.	9617153253
भोपाल	(२ अगस्त) सुबह 11 से शाम 6	जनकविहार कोम्प्लेक्स, मालवियानगर.	9425024405
भिलाई	(३१ जुलाई) शाम 5 से 7-30	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास.	9827481336
अमरावती	(१ अगस्त) शाम 5 से 8	दोशी वाडी, गुलशन पावर पास, जय स्तंभ चौक.	9403411471
औरंगाबाद	(३१ जुलाई) दोपहर 3 से 8	'निमिषा बंगलो', पेंडकर होस्पिटल के सामने, जुबली पार्क चौक के पास, पुलीस कमिश्नर रोड.	8308008897
जलगाँव	(२ अगस्त) शाम 4 से 7	लाज भुवन, प्लोट नं-51, विवेकानंद नगर, जिलापेट, केमीस्ट भुवन रोड, श्री फोटो के पास.	9420942944
हुबली	(२ अगस्त) शाम 4 से 7	श्री लक्ष्मी नारायण सनातन पाटीदार समाज, प्लोट नं- 32, न्यू टीम्बर यार्ड, उंकल	9739688818
चेन्नई	(३१ जुलाई) दोपहर 3 से 6	बी-7, केन्ट एपार्ट. 26 रीथर्डन रोड.	9380159957

दादावाणी

Pujya Deepakbhai's USA-Canada Satsang Schedule 2015

Contact no. for all centers in USA & Canada: 1-877-505-DADA (3232) &
email for USA - info@us.dadabhagwan.org, for Canada - info@ca.dadabhagwan.org

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact No. & Email
30-Jun	Tue	Houston, TX	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Vallabh Preeti Seva Samaj Hall (VPSS Haveli) 11715 Bellfort Village Dr, Houston, TX 77031	Ext. 1013 houston@ us.dadabhagwan.org
1-Jul	Wed	Houston, TX	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
1-Jul	Wed	Houston, TX	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
2-Jul	Thu	Houston, TX	Aptputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM	PROPOSED TRIMANDIR SITE 630 S Middlebush Road, Franklin Township, NJ 08873	Ext. 1020 newjersey@ us.dadabhagwan.org
3-Jul	Fri	New Jersey	Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
4-Jul	Sat	New Jersey	Bhumi Pujan	9-30 AM	12-30 PM		
4-Jul	Sat	New Jersey	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
5-Jul	Sun	New Jersey	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
5-Jul	Sun	New Jersey	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
6-Jul	Mon	New Jersey	Follow-up Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Double Tree by Hilton 5400 Computer Dr Westborough MA 01581 Phone # (508) 366- 5511	Ext. 1016 boston@ us.dadabhagwan.org
8-Jul	Wed	Lowell, MA	Satsang	7-00 PM	9-30 PM		
9-Jul	Thu	Lowell, MA	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
9-Jul	Thu	Lowell, MA	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM	Sringeri Vidhya Bharti Foundation 80 Brydon Drive Etobicoke, Ontario, M9W 4N6	Ext. 1006 toronto@ ca.dadabhagwan.org
10-Jul	Fri	Lowell, MA	Aptputra Satsang	7-00 PM	9-30 PM		
11-Jul	Sat	Toronto, Canada	Satsang	5-00 PM	7-30 PM		
12-Jul	Sun	Toronto, Canada	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM	Main Hall, Hindu Society of North Carolina Temple - 309 Aviation Parkway Morrisville, NC 27560	Ext. 1003 raleigh@ us.dadabhagwan.org
12-Jul	Sun	Toronto, Canada	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
13-Jul	Mon	Toronto, Canada	Follow-up Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
14-Jul	Tue	Raleigh, NC	Satsang Shibir	5-00 PM	7-30 PM	Jain Temple, 435 N Route 59, Bartlett, IL 60103	Ext. 1005 chicago@ us.dadabhagwan.org
15-Jul	Wed	Raleigh, NC	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
15-Jul	Wed	Raleigh, NC	Satsang Shibir	5-00 PM	7-30 PM		
17-Jul	Fri	Chicago, IL	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Helena Sports Complex 110 Sports Complex Dr. Helena AL, 35080 For GPS use: Ruffin Rd, Helena, AL 35080	Ext. 1004 birmingham@ us.dadabhagwan.org
18-Jul	Sat	Chicago, IL	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
18-Jul	Sat	Chicago, IL	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
19-Jul	Sun	Chicago, IL	Follow-up Satsang	10-00 AM	12-00 PM	Arizona Biltmore, A Waldorf Astoria Resort 2400 East Missouri Ave., Phoenix, AZ 85016	Ext. 10 gp@ us.dadabhagwan.org
20-Jul	Mon	Birmingham, AL	Satsang	7-00 PM	9-30 PM		
21-Jul	Tue	Birmingham, AL	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
21-Jul	Tue	Birmingham, AL	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
22-Jul	Wed	Birmingham, AL	Follow-up Satsang	7-00 PM	9-30 PM		
27-Jul	Mon	Phoenix, AZ	GP SHIBIR	9-30 AM	12-00 PM		
27-Jul	Mon	Phoenix, AZ	GP SHIBIR	4-30 PM	7-00 PM		
28-Jul	Tue	Phoenix, AZ	GP SHIBIR	9-30 AM	12-00 PM		
28-Jul	Tue	Phoenix, AZ	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
29-Jul	Wed	Phoenix, AZ	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
29-Jul	Wed	Phoenix, AZ	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
30-Jul	Thu	Phoenix, AZ	Simandhar Swami Pran Pratishtha	9-30 AM	12-00 PM		
30-Jul	Thu	Phoenix, AZ	GP SHIBIR	4-30 PM	7-00 PM		
31-Jul	Fri	Phoenix, AZ	GP Day	8-00 AM	1-00 PM		
31-Jul	Fri	Phoenix, AZ	GP Day	4-30 PM	7-00 PM		

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

दि. २२ अगस्त (शनि), शाम ४ से ७ - सत्संग तथा २३ अगस्त (रवि), शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि
दि. २४ अगस्त (सोम), शाम ४ से ७ - आप्तपुत्र सत्संग
दि. ५ सितम्बर (शनि), रात १० से १२ - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति

जयपुर

दि. २५ अगस्त (मंगल), शाम ५-३० से ८-३० - सत्संग तथा २६ अगस्त (बुध), शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि
दि. २७ अगस्त (गुरु), शाम ५-३० से ८-३० - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : उत्सव होल, पी-१०, सेक्टर - २, विद्यानगर, जयपुर (राजस्थान). संपर्क : 8560894235

नागपुर

दि. २८-२९ अगस्त (शुक्र-शनि), शाम ५ से ८ - सत्संग तथा ३० अगस्त (रवि), शाम ४-३० से ८ - ज्ञानविधि
दि. ३१ अगस्त (सोम), शाम ५ से ८ - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : देशपांडे होल, आमदर निवास के सामने, सिविल लाइन्स, नागपुर, (महाराष्ट्र). संपर्क : 8421680086

अमरावती

दि. १ सितम्बर (मंगल), शाम ६ से ९ - सत्संग तथा २ सितम्बर (बुध), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि
दि. ३ सितम्बर (गुरु), शाम ६ से ९ - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : संत ज्ञानेश्वर सांस्कृतिक भवन, ITI कोलेज के सामने, मोरशी रोड (महाराष्ट्र). संपर्क : 9422335982

दिल्ली

दि. २५-२६ सितम्बर (शुक्र-शनि), शाम ५-३० से ८-३० - सत्संग तथा २७ सितम्बर (रवि)शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि
दि. २८ सितम्बर (सोम), शाम ५-३० से ८-३० - आप्तपुत्र सत्संग, स्थल की जानकारी के लिए संपर्क : 9810098564

जालंधर

दि. २९ सितम्बर (मंगल), शाम ४-३० से ७-३० - सत्संग तथा ३० सितम्बर (बुध)शाम ४ से ७-३०- ज्ञानविधि
दि. १ अक्टूबर (गुरु), शाम ४-३० से ७-३० - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : देश भगत यादगार होल, जी.टी. रोड, जलंधर. संपर्क : 9814063043

अडालज त्रिमंदिर में पर्युषण पारायण

१० से १७ सितम्बर (गुरु से गुरु) पर्युषण पारायण - आप्तवाणी ३ तथा १३ (पू.) पर वांचन-सत्संग प्रश्नोत्तरी
१८ सितम्बर (शुक्र) सुबह ९ बजे से - दर्शन का विशेष कार्यक्रम
पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-३ और १३ (पू.) (गुजराती) किताबों का वाचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समझ सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते हैं।)

परम पूज्य दादा भगवान का १०८वाँ जन्मजयंती महोत्सव - पूणे शहर में

उद्घाटन समारोह : २४ नवम्बर, जन्मजयंती : दि. २५ नवम्बर,

सत्संग शिविर : दि. २४ से २९ नवम्बर, ज्ञानविधि : दि. २८ नवम्बर

स्थल : मुलिक पेलेस ग्राउन्ड, कल्याणी नगर, द बीशोप स्कूल के सामने, पूणे.

इस बार जन्मजयंती महोत्सव के दौरान समग्र सत्संग तथा ज्ञानविधि कार्यक्रम विशेषतः हिन्दी में होंगे।

जून 2015
वर्ष - 10 अंक - 8
अखंड क्रमांक - 116

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD, P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

प्रतिक्रमण वह है पुरुषार्थ

किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं होना चाहिए। यह तो अन्जाने में औरों को बेहद दुःख हो जाता है ! सामनेवाले को दुःख नहीं हो उस तरह आप काम लो, तो वह क्रमण कहलाता है। अतिक्रमण कब कहलाता है? आपको जल्दी हो और वह चाय पीने गया हो, फिर उसके आते ही तुरंत आप चिल्लाओ कि 'कहाँ गया था, नालायक है, 'वगैरह-वगैरह तो ऐसा करना अतिक्रमण कहलाता है। और वह आप से स्वाभाविक रूप से हो जाता है। उसमें आपकी इच्छा नहीं होती। अतिक्रमण होना स्वाभाविक है लेकिन प्रतिक्रमण करना अपना पुरुषार्थ है। ताकि जो किया है वह मिट जाए। प्रतिक्रमण करने से, लगा हुआ दाग तुरंत मिट जाता है।

-दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.